अरे हिन्दू तुम जागो !

लेखक :
डॉ. राधा कमल चटर्जी
एम.ए., पी.एच.डी. (यू.एस.ए.)

अनुवादक :
डॉ. रामनाथ
एम.एस.सी. (एजी.), पी.जी. (एन.), पी.एच.डी.
पूर्व प्रोफे. एवं कुलपति
सी.एस.ए. कृषि एवं प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय, कानपुर

अनुवादक से सम्पर्क : ए-708, आवास विकास, हंसपुरम्, नौबस्ता
कानपुर नगर - 208 021

अरे हिन्दू तुम जागो !

(OH HINDU YOU AWAK !)

लेखक :
डॉ. राधा कमल चटर्जी
एम.ए., पी.एच.डी. (यू.एस.ए.)

अनुवादक :
डॉ. रामनाथ
एम.एस.सी. (एजी.), पी.जी. (एन.), पी.एच.डी.
पूर्व प्रोफे. एवं कुलपति
सी.एस.ए. कृषि एवं प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय, कानपुर

हिन्दुत्व बचाओ अभियान समिति
बंकिमचन्द चटर्जी मार्ग
कलकत्ता

अनुवादक से सम्पर्क : ए-708, आवास विकास, हंसपुरम्, नौबस्ता
कानपुर नगर - 208 021

प्रकाशन : अरे हिन्दू तुम जागो !
(Oh Hindu You Awak !)

प्रकाशन तिथि : सिम्बर 2009

लेखक : डा. राधा कमल चटर्जी

अनुवादक : डा. रामनाथ
ए-708, आवास विकास, हंसपुरम् नौबस्ता,
कानपुर नगर - 208021

मुद्रित प्रतियाँ : एक हजार

सहयोग राशि : 25/-

टाइप सेटिंग : साँई ग्राफिक्स, बर्रा, कानपुर
मो0 9506612059, 9628999919

विषय-सूची

पृष्ठ संख्या

प्राक्कथन

अरे हिन्दू तुम जागो!!! का प्राक्कथन लिखना मैने बगैर किसी सन्देह के स्वीकार कर लिया। सत्य का पता चलना चाहिये। कोई भी व्यक्ति यदि इस पुस्तक को बिना किसी पूर्वाग्रह के पढ़ेगा तो वह निश्चय ही इसकी विषय सामग्री से सहमत होगा। एक हिन्दू होने के नाते मैने सर्वप्रथम इसकी विषय सामग्री पर विश्वास नही किया, लेकिन जब मैने पुस्तक के अन्त में दिये गये वीडियो टेप और पुस्तकों को पढ़ा तो मेरे दिल के आघात और दु:ख की सीमा नहीं रही।

भारत की शासक जाति ने इस देश और विशेषकर हिन्दुत्व को इतना असहनीय नुकसान पहुँचाया है जिसके लिये उनको कोई भी सच्चा व ईमानदार व्यक्ति कभी क्षमा नहीं कर पायेगा। उन्होंने अपने प्रचण्ड प्रचार माध्यमों द्वारा भारतीय नवयुवकों के मस्तिष्क में जहर घोल रक्खा है। संघ और उसके संघ परिवार के पूर्ण सैनिक प्रशिक्षण का उद्देश्य अपने साथी भारतीय नागरिकों की हत्या करना है। छुआछूत भेदभाव और जाति व्यवस्था ने भारत को टुकड़ो-टुकड़ों में तोड़ दिया है। शिक्षा धन सम्पत्ति राजनीति व प्रचार माध्यमों आदि सभी क्षेत्रों में अपने पूर्ण नियंत्रण से उन्होंने अपने को मालिक जाति सिद्ध कर दिया है। अब हमें पता चला है कि उन्होंने अंग्रेजों को क्यों मार भगाया था।

हमारी पवित्र व धार्मिक पुस्तकें हमें क्या शिक्षा देती हैं? हमारे यहां कितने भगवान देवी देवता हैं क्या हमारी धार्मिक पुस्तकों की कहानियाँ इतिहास पर आधारित हैं? या मात्र लाल बुझक्कड़ी कपोल कल्पनायें? ये मानव भगवान देवता राम-सीता, शिव, ब्रह्माँ, पार्वती गणेश और कृष्ण के बारे में क्या कहती हैं। क्या इन कहानियों में किसी को कामोत्तेजना व अश्लीलता के दर्शन नहीं होते? कम से कम मैं उनको अपनी माँ बेटी व बहिन को नहीं सुना सकता। क्या आप सुना सकते हैं? कोई विदेशी यदि लिंगम और योनि का अर्थ पूछे तो हम क्या जवाब देंगे? हमारे भभूत सूर्य नमस्कार मूत्रपान आदि ने हमारी "अज्ञानता" को सिद्ध किया है।

धर्म मनुष्य का मनुष्य से नहीं, मनुष्य का ईश्वर से सम्बन्ध का सूचक है। ईश्वर तक पहुँचने के लिये सर्वोत्तम साधन यह है कि अपने साथी मानवों के साथ समान अधिकार प्यार सम्मान और न्याय का बर्ताव किया जाय। दुनियाँ

के सभी धर्म इन्हीं सिद्धान्तों पर आधारित हैं।

दुर्भाग्य से हिन्दू धर्म जिसको ब्राह्मणों ने पैदा किया है, ठीक इसका उल्टा उपदेश देता है। वह ऊँची जाति के ब्राह्मणों को नीची जातियों को गुलाम बनाने ठगने व धोखा देने की शिक्षा देता है। यह वास्तव में उनके लिये लाभदायक सिद्ध हुआ है क्योंकि भारत की 95% जनसंख्या पाँच प्रतिशत जनसंख्या द्वारा शासित है।

हम और आप अपनी मातृभूमि को एक रात में नहीं बदल सकते, लेकिन हमें अपने देश से प्यार होने के नाते जो बन सके, करना चाहिए। खासकर 6 दिसम्बर 1992 को बाबरी मस्जिद ढह जाने के बाद मेरे जैसे हिन्दू व्यथित है। हमें डर है कि हमारी मातृ भूमि जो पहले ही सन् 1947 में बंट चुकी है, आर्यों की साजिश से दूसरे बंटवारे का सामना करेगी। ईश्वर करे कि ऐसा न हो। मैं कह सकता हूं कि भारत में हिन्दू का अर्थ सिर्फ ब्राह्मण से है। क्या इसे स्वामी विवेकानन्द ने नहीं कहा? क्या इसी सत्य को कहने के कारण वे ब्राह्मणों द्वारा दण्डित नहीं किये गये?

आक्फोर्ड यूनीवर्सिटी — डॉ. जी. श्रीवात्सा

मई 10, 1993 — एम.ए., पी.एच.डी. (लन्दन)

अनुवादकीय

शूद्र महर्षि शम्बूक की हत्या किसने की व एकलव्य का अंगूठा किसने काटा? विघटनकारी चार वर्ण किसने बनाये? मगध राज्य पर हमला करने के लिये सिकन्दर को किसने बुलाया? भारतीय इतिहास का स्वर्णिम पृष्ठ लिखने वाले बृहद्रथ मौर्य की हत्या, बौद्धों का नरसंहार व विश्वविद्यालयों पुस्तकालयों को किसने ध्वस्त किया? हिटलर को भी बौना व फीका बनाने वाली काले कानूनों की किताब मनुस्मृति का लेखक कौन था? ब्रह्म सत्यम् जगत मिथ्या के मिथ्यावाद की आड़ में गुप्तकाल के स्वर्ण युग की विनाश लीला किसने की? पृथ्वी को इक्कीस बार क्षत्रिय विहीन किसने किया? मन्दिर का झण्डा झुकाकर मोहम्मद बिन कासिम की विजय किसने सुनिश्चित की? सोमनाथ के मंदिर का जो फाटक हाथियों से भी न टूटता उसे मोहम्मद गजनी के लिये किस गद्दार व लालची ने खोला? मोहम्मद गोरी को जयचन्द की गद्दारी की चिट्ठी ले जाने वाला कौन था? बंगाल का वह गद्दार राजा कौन था जो मोहम्मद बख्तियार के डर से महल के पीछे के दरवाजे से भाग गया था? अकबर की भंडैती किसने की, अल्लोपनिषद किसने लिखवाया तथा भारतीय बहू बेटियों के मीना बाजार किसने लगवायें?

महाराजा रणजीत सिंह व स्वामी दयानन्द सरस्वती को भोजन के साथ जहर किसने दिया? सतगुरु रैदास की वाणी को किसने जलाया तथा उनकी हत्या किसने की? छत्रपति शिवाजी का राज्याभिषेक बगैर नहाये बायें पैर के अंगूठे से किसने किया? तथा उनकी व उनके पुत्र की हत्या किसने की? पेशवा बाजीराव कौन था जिसके डर से सुन्दर महिलायें जहर खाकर आत्म हत्या कर लेती थी? स्वामी विवेकानन्द को शूद्र कहकर विश्वधर्म संसद में जाने का विरोध किसने किया? महात्मा ज्योतिराव फूले की हत्या के लिये हत्यारे किसने भेजे? भारत का बंटवारा किसने और क्यों कराया? गाँधी की हत्या किसने की? बाबा साहेब अम्बेडकर को किसकी साजिश से जहर दिया गया? इन्दिरा गाँधी को अकाल तख्त उड़ाने व हजारों सिक्खों की हत्या कराने के लिये किसने उकसाया? इन्दिरा गाँधी को किस पन्डे ने मन्दिर परिसर में नहीं घुसने दिया था? वो जनरल कौल कौन थे जो दवा कराने के बहाने भारत चीन युद्ध का मैदान छोड़कर दिल्ली भाग आये थे? बीस साल तक विभिन्न मन्त्रालयों के अति गोपनीय दस्तावेजों को मोटी रकम लेकर विदेशों को बेचने वाला कुमार नरायन अय्यर कौन था? मोसाद की मदद से राजीव गाँधी की हत्या किसने कराई? तथा बाबरी मस्जिद किसने गिराई। इन सभी सवालों का जवाब पाठकगण स्वयं जानते हैं।

राम ब्राह्मणों के इसीलिये प्यारें हैं क्योंकि राम सिर्फ ब्राह्मणों को ही प्यार करते हैं। राम राज्य का अर्थ ब्राह्मण राज्य। राम के राज्य के बाद स्वतंत्र भारत में पहली बार एक छत्र राम राज्य आया है। सरकारी नौकरियों में 70%, आई ए एस में 72% आई पी एस में 61%, बैंकों में 57%, रेडियो टेलीविजन में 83%, सी बी आई कस्टम एक्साइज में 72%, खेतों, कारखानों, शिक्षा, मठाधीशी आर्थिक घुटालों आदि में एक छत्र रामराज्य व्याप्त है। एक बार पूर्व प्रधान मंत्री चौधरी चरण सिंह ने कहा था कि उत्तर प्रदेश के बावन जिलों के बावन जिला सूचना अधिकारी बाम्हन हैं। इस राम राज्य को रघुपति राघव राजाराम वाले गाँधीवादी लाये हैं। अब जय श्रीराम वाले कौन सा और कितना रामराज्य लाना चाहते हैं? जाहिर है कि इस रामराज्य में पढ़ने पर आंख फोड़ देना, जीभ काट लेना या शम्बूक की तरह गर्दन काट देना, सुनने पर कान में गर्म रांगा या तेल भर देना, थूकने के लिये गले में हांडी, कमर में झाड़ू व पैरों में चिथड़ा बांधना बाकी है।

कांशीराम के पन्द्रह-पचासी के सिद्धान्त को इस पुस्तक के लेखक डॉ. राधा कमल चटर्जी ने संशोधित करके 5:95 कर दिया है। उनके इस फार्मूले से न्याय, समता, बन्धुत्व व लोकतंत्र में विश्वास करने वाला हर व्यक्ति सहमत हुये बगैर नहीं रह सकता। यदि दलितों, पिछड़ों, आदिवासियों, मुसलमानों, ईसाइयों व बौद्धों में से कोई इस पुस्तक को लिखता तो लोग बहत्तर कोण का मुंह बनाते और इसे विधर्मियों, नास्तिकों व म्लेच्छों की करतूत घोषित कर दिया जाता। परन्तु इस पुस्तक का लेखन व प्राक्कथन दो बुद्धिजीवी ब्राह्मणों द्वारा सम्पन्न हुआ है। बाबा साहेब अम्बेडकर ने कहा था कि ब्राह्मणों ने कोई वाल्टेयर पैदा नहीं किया। परन्तु डॉ. चटर्जी ने वाल्टेयर पैदा होने का मार्ग प्रसस्त कर दिया है।

इस पुस्तक को पढ़ने के बाद ऐसा आभाष होगा कि भारत के चतुर्मुखी पतन के कसूरवार सिर्फ हिन्दू राष्ट्रवादी ही है। बल्कि इसके जिम्मेंदार गाँधीवादी जिनको सेक्यूलर ब्राह्मण भी कहते हैं, अधिक हैं। इनको ब्राह्मणवाद की ए टीम तथा हिन्दू राष्ट्रवादियों को बी टीम कहा जाता है। सन् 1985 तक गांधीवादियों ने मुसलमानों व दलितों के खिलाफ साल में 400 दंगे करवाये। उस समय कांग्रेस दंगा पार्टी कहलाती थी। अब ये काम इन्होंने अपनी बी टीम को सौंप रक्खा है। और अब ये सौ-सौ चूहे खाकर बिल्ली हज को चली की कहावत को चरितार्थ करके अपने को धर्म निर्पेक्ष कहते हैं। अब तक जो दंगे हुये हिन्दू राष्ट्रवादियों व गाँधीवादियों की मिली भगत थी। जिन कतली हत्यारों ने 1984 में सिक्खों का नरसंहार किया, वही हत्यारे 1992 में मुसलमानों के नरसंहार हेतु गुजरात भेजे गये थे। मनुवादी जुड़ीसियरी इनके आका का रोल अदा करती

है जो इनके हित में हर निर्णय देती है।

तीसरे वामपन्थी हैं जो ब्राह्मणवाद की सी टीम हैं। इनको मनुवादी माओवादी भी कहते हैं। ये अपने को सी पी आई (मार्क्सवादी), सी पी आई, सी पी आई (लेनिन) सी पी आई (माओवादी) व फार्वर्ड ब्लाक कहते हैं ये सब एक ही थैली के चट्टे बट्टे हैं। ये ब्राह्मणवाद की ए और बी टीमों की सरकारों से पैसा व हथियार लेकर दलित व आदिवासियों को मरवाने के लिये माओवादी आतंकवाद चला रहे हैं ताकि शासन सत्ता ए, बी व सी टीमों के अन्दर घूमती रहे। इसका प्रमाण यह है कि ये सवर्ण बाहुल्य राज्यों में माओवाद न चलाकर सिर्फ दलित व आदिवासी क्षेत्रों में चला रहे हैं। जाहिर है कि सवर्ण बाहुल्य राज्यों में हद की सीमा तक पूँजीवादी लूटमार व असमानता व्याप्त है।

ये एक दूसरे के पूरक हैं जो मुसीबत में एक दूसरे के काम आते हैं। दिन में ये कुत्ते-बिल्लियों की तरह लड़ते दिखते हैं परन्तु रात में एक ही मेज पर खाना खाते हैं। गत अविश्वास प्रस्ताव के दौरान इन्होंने सासदों की खरीद फरोख्त की तथा बीजेपी ने अपने कई सांसदों को गैरहाजिर करा दिया। यह घृणित कृतित्व महज इसलिये किया गया कि यूपीए सरकार गिरने की सूरत में कु. मायावती को प्रधानमंत्री बनने का मौका न मिल सके। गत लोक सभा चुनाव में भी इन तीनों ने अपने सारे मतभेद भुलाकर कांग्रेस की झोली में अपनी बहुत सी सीटें डाल दी, महज इसलिये कि कु. मायावती को दिल्ली आने से रोका जा सके। उन्हें डर है कि देश में राजनैतिक सत्ता परिवर्तन के साथ समाज व्यवस्था में भी परिवर्तन होगा जो ब्राह्मणवाद की कब्र खोदने हेतु मार्ग प्रसस्त करेगा। इतनी अच्छी व प्रभावकारी पुस्तक लिखने के लिये डॉ. चटर्जी बधाई के पात्र हैं। इसीलिये मैं इसका हिन्दी में अनुवाद करने के लिये मजबूर हो गया।

-डॉ रामनाथ

कृपया ध्यान दें

इस पुस्तक में दिये गये सभी तर्क पूरे प्रमाणों व तथ्यों पर आधारित है जिनके श्रोतों, उनके प्रकाशनों और पतों को हमने पुस्तक के अन्त में सूचीबद्ध किया है।

हम आपके बहुमूल्य सुझाव व आलोचना का अपने संशोधित संस्करणों हेतु स्वागत करेंगे।

खुली गारन्टी

इस पुस्तक का कोई कापीराइट नहीं है। इसका अनुवाद, फोटोकापी, पुनः प्रकाशन, पुनर्मुद्रण और बिक्री बिना अनुमति के किया जा सकता है।

प्यारे हिन्दुओं, आपके लिये

यदि आप हिन्दू हैं और हिन्दुत्व को बचाना चाहते हैं तो आत्म निर्णय करें और यदि इस पुस्तक की विषय सामग्री को सत्य पायें तो इस पुस्तक का प्रचार व प्रसार करें।

भारत के सच्चे नागरिक होने के नाते आप अपने कर्तव्य के पथ से विचलित न हों यदि आप इन भ्रष्ट रीति रिवाजों को समाप्त करने में असफल होते हो तो तुम्हारे लड़कों व नाती पोतों को इसका खामियाजा भुगतना पड़ेगा।

महान दार्शनिक एडमन्ड बर्क ने कहा है–
"मृक दर्शक खतरनाक होते हैं"

अपनी मातृभूमि को बचाओ

हम अपनी मातृभूमि भारत को प्यार करते हैं और किसी के प्रति हम कोई घृणा नहीं करते। भारतीय होने के नाते हम अपनी मातृभूमि की मदद करके उसे मुसीबतों से छुटकारा दिलाना चाहते हैं तथा उसके नागरिकों में शान्ति और भाईचारा कायम करना चाहते हैं। इसी को ध्यान में रखकर यह पुस्तक लिखी गई है।

सोये हुये हिन्दुओं

इस पुस्तक का मूल उद्देश्य अपने सोये हुये हिन्दू बहिन भाईयों को जाग्रत करना है

1. बाबरी मस्जिद को ध्वस्त करना हिन्दूवाद नहीं है।
2. मण्डल आयोग का विरोध करना हिन्दूवाद नहीं है।
3. यह कहना कि दलित अयोग्य होते हैं- हिन्दूवाद नहीं है।
4. स्वर्ण मंदिर में सेना भेजना और हजारों सिक्खों को मौत के घाट उतारना हिन्दूवाद नहीं है।
5. जिन्होंने (आर एस एस) महात्मा गाँधी की हत्या की वे हिन्दू नहीं है।
6. आर एस एस/बीजेपी/बीएचपी/शिव सेना हिन्दू नहीं हैं। ये आतंकवादी देशद्रोही हैं
7. यदि आप प्यारे हिन्दुओं इन फासी हिन्दुओं से भारत को नहीं बचाओगे तो वे हिन्दूवाद को नष्ट कर देंगे।

अध्याय – 1

परिचय

जवाहर लाल नेहरु ने अपनी पुस्तक "भारत की खोज" (पृष्ठ 75 आक्सफोर्ड यूनीवर्सिटी प्रेस 1991) में कहा है –

विश्वास के तौर पर हिन्दुत्व संदिग्ध, बिना किसी खास पहिचान का, बहुपक्षीय तथा इसमें सभी चीजें सभी के लिये हैं। इसकी परिभाषा करना अथवा निश्चित तौर पर यह कहना कि यह धर्म है या नहीं, बहुत कठिन है। अपने वर्तमान और यहाँ तक भूतकाल के स्वरूप में यह बहुत से ऊँचे और नीचे विश्वासों और परम्पराओं को समेटे हुये हैं जो अक्सर एक दूसरे का विरोध या खण्डन करते हैं।

धर्म क्या है?

धर्म इस संसार में व इसके बाद सफलता प्राप्त करने की एक जीवन पद्धति व आचरण है। प्रत्येक धर्म का यही मूल सिद्धान्त है। लेकिन ईश्वर तक पहुंचने के लिये विभिन्न रास्ते व तरीके अपनाये जाते हैं। धर्म न्याय प्रेम मानवता व समान अधिकार पर आधारित होना चाहिये। धर्म को मानव प्रकृति को सन्तोष प्रदान करना चाहिये। पूरी मानवता ईश्वर द्वारा श्रजित है और ईश्वर अपने श्रजन में काले-गोरे, ऊँच-नीच, अमीर-गरीब आदि में भेद नहीं करता। ईश्वर हमेशा सही सिद्धान्त का पक्ष लेता है और कुदरती तौर पर कमजोर पर हमला करने का पक्ष नहीं लेता। कोई भी मनुष्य दूसरे मानव साथी को धर्म के नाम पर नुकसान पहुंचाने, गुलाम बनाने, मूर्ख बनाने व धोखा देने से ईश्वर को प्राप्त नहीं कर सकता।

इस पुस्तक का उद्देश्य

इस पुस्तक का उद्देश्य किसी धर्म पर हमला करना नहीं है। हम समर्पित हिन्दू हैं। इस पुस्तक में हम हिन्दू धर्म के नाम पर किये गये सत्य के साथ विश्वासघात और मानव गरिमा के साथ अन्याय का पर्दाफाश करना चाहते हैं। भारत में बहुत से धर्म है। इसीलिये प्रत्येक धर्म के अनुयायी को दूसरे धार्मिक विश्वासों का सम्मान करना चाहिये। दुःख है कि इन स्वयंभू ऊँची जाति के ब्राह्मणों ने हिन्दुओं के मस्तिष्क में दूसरे धार्मिक विश्वासों के प्रति नफरत के

बीज बोये हैं जिसके कारण मुसलमानों व ईसाइयों में ही नही बल्कि नीची जाति के हिन्दुओं को भी शान्ति पूर्ण जीवन यापन करने में भारी कठिनाई पैदा हो गई है।

दूसरी ओर भारत में साम्प्रदायिक अस्थिरता के पीछे ये ऊँची जाति के हिन्दू विशेषकर ब्राह्मण हैं जिन्होंने नीची जाति के हिन्दू मुसलमान व ईसाइयों को मुसीबत में डाला है।

उदाहरण के तौर पर उनका यह दावा है कि 600 चर्च 3000 मस्जिदें पहले हिन्दू मन्दिर थे- पूर्णतया झूठ है तथा यह किसी ऐतिहासिक व वैज्ञानिक तथ्य पर आधारित नहीं है। किसी भी इतिहास की किताब में यह नहीं लिखा।

क्या आपने आज का अखबार पढ़ा? यदि हाँ तो आपने उसे पूरे भारत में हिन्सा की खबरों से भरा पाया होगा। एक स्थान भारत पर ऊँची जाति का हिन्दू नीची जाति के हिन्दू को गुलाम बनाये हुये है। दूसरे स्थान पर हिन्दू व मुस्लमान जंगली की तरह लड़ते और हिन्दू व सिक्ख एक दूसरे का गला काटते मिलेगें।

क्या आपने कभी सोचा है कि ये उपद्रव क्यो होते हैं? और इनको कौन उकसाता है? यदि आप सोचें और पता लगायें तो उत्तर बहुत ही आसान है। इसके आयोजक (आतंकवादी) राष्ट्रीय स्वयं सेवक संघ (आर एस एस) शिव सेना तथा उनके अन्य साथी संगठनों के ऊँची जाति के ब्राह्मण हैं। ये राष्ट्र पिता गाँधी के हत्यारे हैं।

ब्राह्मण बिना अपने धर्म की बुराइयों को देखे दूसरों के धर्मो की आलोचना करते हैं। इसलिए हमें मजबूर होकर कुछ तथ्यों को प्रकाश में लाने के उद्देश्य से यह पुस्तिका लिखी है। हम विश्लेषण करें और देखें कि क्या इस ब्राण्ड का हिन्दुत्व (ब्राह्मणवाद) मानव प्रकृति को सन्तोष प्रदान करता है और या कि यह न्याय, प्रेम, मानवता और समान अधिकार पर आधारित हैं।

एक खुली चुनौती

मेरे प्यारे भारतीय नागरिकों,-मुझे पूरा विश्वास है कि इस पुस्तिका को तैयार करने में प्रयुक्त ब्राह्मणों की पवित्र धार्मिक पुस्तकों से संकलित अकाट्य तथ्यों से आपकों भारी आघात पहुँचेगा।

हम किसी भी ब्राह्मण को इस पुस्तिका की विषय वस्तु को आम जनता में,

समाचार पत्रों में या उसकी इच्छानुसार किसी भी प्रचार माध्यम द्वारा चुनौती देने हेतु आमंत्रित करते है। यदि हम उनके द्वारा इस पुस्तक के सम्बन्ध में कोई भी टिप्पणी नहीं सुनते हैं तो पाठकों को सत्यता का पता चल जायेगा।

गत छः वर्षो में इस पुस्तिका के कई संस्करण छपे लेकिन अब तक हमें एक भी शिकायत प्राप्त नहीं हुई। इसका अर्थ यह है कि हम सही रास्ते पर है।

क्या आप हिन्दू हैं ?

यदि हाँ तो क्या वास्तव में आपने वेद उपनिषद स्मृतियाँ और पुराणों (रामायण और महाभारत) को पढ़ा?

आपका उत्तर शायद अवश्य नहीं में होगा।

हिन्दू मानसिकता ही ऐसी है कि वह अक्सर कोई भी चीज को बिना उसकी विश्वस्यनीयता पर प्रश्न पूछे स्वीकार कर लेती है। इसका कारण यह है कि ऊँची जाति के ब्राह्मणों ने बहुतसी शताब्दियों तक यही पढ़ाया है कि नीची जाति के हिन्दुओं को हिन्दुओं के धार्मिक विश्वासों और पौराणिक शास्त्रों की खामियों के बारे में प्रश्न पूछने का अधिकार नहीं है।

ब्राह्मणों से सवाल पूछने के ही कारण भारत के प्रसिद्ध हिन्दू स्वामी विवेकानन्द ब्राह्मणों की घृणा के पात्र बने तथा उनको शिकागो की धर्म सन्सद में भाग लेने हेतु धन देने से इनकार कर दिया गया था।

अध्याय - 2

ब्राह्मण कौन हैं?

ब्राह्मण शब्द के अन्तर्गत भारत के सभी ऊँची जाति के हिन्दू आते हैं। उनका दावा है कि वे ईश्वर द्वारा नियुक्त किये गये हैं क्यों कि वे ब्रह्माँ जी के मुख से पैदा हुये है। ब्राह्मण की पूजा करना अवतारी भगवान की पूजा करना है। ब्राह्मण की सेवा करना और उसको दान दहेज देना स्वयं भगवान की सेवा करने के समान है। यही वो विश्वास है जिसकी शिक्षा लोगों को विशेषकर नीची जाति के हिन्दुओं को दी गई है। इसी का नतीजा है कि भारत की पाँच प्रतिशत जनसंख्या ने 95/ जनसंख्या को मानसिक गुलाम बना रखा है।

ब्राह्मण आर्य घुसपैठिए हैं हजारों साल पहले खैबर दर्रा से प्रवेश किये। भारत के मूल निवासियों पर शासन करके और उन्हें गुलाम बना के उन्होंने शताब्दियों से भारत भूमि में अपने को भली प्रकार स्थापित कर रखा था। यही सब एक आर्य जवाहरलाल नेहरु ने अपनी पुस्तक भारत की खोज में कहा है। (पे. 72-73)

ब्राह्मणों में विभाजन

दक्षिण भारत में ब्राह्मण मुख्य रूप से अय्यरों और अयंगारों में विभाजित है। ब्राह्मणों के इन दो वर्गो के गहन अध्ययन से पाठकों को उनके देवताओं खानदानों संस्कृति और इससे बढ़कर सत्ता और प्रभाव को लेकर उनके बीच चली आ रही सदियों पुरानी गुप्त प्रतिद्विन्दता का पता चलेगा।

दैहिक गठन के हिसाब से अय्यर ब्राह्मण आर्य घुसपैठियों के ही उत्तराधिकारी है। वे गोरे रंग के लम्बी नाक तथा जर्मनों के दैहिक नाक नक्श के समान पाये जाते हैं।

मनुस्मृति (हिन्दुत्व की बायबिल) कहती है:

(अ) ब्राह्मण धर्म के लिये पैदा हुआ है। दुनियाँ में जो भी है वह सब ब्राह्मण की सम्पत्ति है। अपने जन्म की इस महिमा के कारण वह सभी वस्तुओं का अधिकारी है। सभी प्राण घातक दैहिक दुख ब्राह्मण की दया से शान्त हो जाते हैं।

(ब) मूर्ख या विद्वान ब्राह्मण भी साक्षात भगवान के समान है।

तीनों लोक व देवता ब्राह्मणों के अस्तित्व को स्वीकार करते हैं।

डॉ. अम्बेडकर ने ब्राह्मणवाद के छः मुख्य सिद्धान्त बताये है:

1. सभी वर्गो में क्रमबद्ध असमानता
2. शूद्रों और अछूतों को पूर्ण रूप से निहत्ता रखना
3. शूद्रों और अछूतों को पूर्ण रूप से शिक्षा से वंचित रखना
4. शूद्रों और अछूतों को सत्ता व अधिकार के पदों पर पूर्ण रोक
5. शूद्रों और अछूतों को सम्पत्ति अर्जन पर पूर्ण रोक
6. महिलाओं का पूर्ण रूपेण दमन व उत्पीड़न

अतः असमानता ब्राह्मणवाद का खानदानी सिद्धान्त है (मनु पे. 204)

देवाधिनाम् जगत सर्वम्
मंत्राधिनाम् त देवता
तम मन्त्राम् ब्राह्मणाधिनाम्
ब्राह्मणां नाम त देवता

अर्थ:

सारा जगत देवताओं के अधीन है।
देवता मन्त्रों के अधीन हैं।
मंत्र ब्राह्मणों के अधीन है
अत: ब्राह्मण ही अपने भगवान है।

(आबे जे. ए. डिबोइस के ग्रन्थ "हिन्दू मैनर्स, कस्टम्स, और सेरीमोनीज आक्सफोर्ड तृतीय संस्करण 1906 पेज 139)

धर्मान्ध हिन्दू दल

राष्ट्रीय स्वयं सेवक संघ (आर एस एस)
विश्व हिन्दू परिषद
हिन्दू मन्नानी
आर्य समाज
शिव सेना
भारतीय जनता पार्टी (भाजपा)
सन्त समिति
हिन्दू महासभा

बजरंग दल

धर्मान्ध नेता

एल.के. अडवानी

अशोक सिंघल

बाला साहब देवरस

बाल ठाकरे

अटल बिहारी वाजपेई

सावरकर

बेकुण्ठ लाल शर्मा "प्रेम"

बलराज मधोक

पुरी के शंकराचार्य निरंजन देव तीर्थ

राम गोपाल

धर्म लिंग नाडार

चो. रामास्वामी

पेजावर स्वामी

राष्ट्रीय स्वयं सेवक संघ (आर. एस. एस.)

एक चितपावन ब्राह्मण केशव बलिराम हेडगेवार आर. एस. एस. के संस्थापक थे। आज आर. एस. एस. बहुत शक्तिशाली हो गये हैं तथा भारत की एकता के लिये खतरा बन गये हैं। हममे से बहुत से आर एस. एस. की नीतियों व सिन्द्धान्तों को नहीं जानते:

- औरतें आर एस. एस. की सदस्य नहीं बन सकती
- आर एस. एस. औरतों के मताधिकार का विरोधी है
- सिर्फ चित पावन ब्राह्मण (नीली आँखों के लोग जिनकी नीची जाति व हिन्दू कोबरा से पहचान करते हैं) ही आर एस. एस. का नेता बन सकता है
- ये साम्यवाद सिक्ख ईसाई व इस्लाम के विरोधी हैं
- इनका मुख्य सिद्धान्त ये है कि सिर्फ आर्य (ब्राह्मण) ही भारत पर शासन करें।

- ये द्रविड़ों जो भारत के मूल निवासी हैं, के विरोधी हैं
- इनके सदस्यों को हर प्रकार के आतंकवाद की ट्रेनिंग दी जाती हैं।
- ये सती प्रथा (विधवाओं को जलाना) का समर्थन करते हैं।
- इनका उद्देश्य मृत भाषा संस्कृत को राष्ट्रीय भाषा का दर्जा देना है।
- अफवाह फैलाने व जनता का मत परिवर्तन करने में इनको विशेषता प्राप्त है।
- ये वर्णाश्रम धर्म की स्थापना करना चाहते हैं जिनका अर्थ आर्यो का शासन होता है।

आर एस. एस. की उपलब्धियां

- महात्मा गांधी की हत्या
- उन्होंने डॉ. अम्बेडकर को जहर देकर मारा
- उन्होंने पिछड़े वर्ग के नेता कामराज नाडार की हत्या करने का प्रयास किया।
- उन्होंने सिक्खों के खिलाफ घृणा फैलाई तथा इन्दिरा गाँधी को स्वर्ण मन्दिर ध्वस्त करने व सन्त भिण्डरांवाले और हजारों सिक्खों का नरसंहार करने को मजबूर किया।
- उन्होंने मदर टेरेसा को भारत रत्न देने का विरोध किया।
- उन्होंने कर्पूरी ठाकुर पर हमला किया तथा अन्ततः उनकी हत्या कर दी (यह इस लिये किया गया क्यों कि वे नाई जाति के थे)
- उन्होंने कर्नाटक के मशहूर नेता देवराज उर्स की हत्या की।
- उन्होंने मोसाद की मदद से राजीव गाँधी की हत्या की।
- कुछ समय से आर एस. एस. इन हत्याओं का जिम्मा लेने हेतु अवकाश प्राप्त पुलिस व सेना के अधिकारियों की भर्ती कर रहा है।

शिव सेना

गर्व से कहो कि हम हिन्दू हैं-शिव सेना का नया आवाहन है। यह भारत और उसकी भलाई के लिये नहीं हिन्दू धर्मान्धता के नाम पर है। बाल ठाकरे (शिव सेना के संस्थापक) का प्रथम लक्ष्य मलयाली तमिलों व कन्नड़ों को बम्बई

छोड़ने पर मजबूर करना था। जब इसका ज्यादा समर्थन नहीं मिला तो उन्होंने अपना रुख सिक्खों ईसाइयों व मुसलमानों के प्रति नफरत फैलाने के लिये किया।

ओ हिन्दुओं! सिक्खों ईसाई और मुसलमानों से लड़ने के बजाय तुम जाति व्यवस्था से क्यों नहीं लड़ते? गर्व से कहो हम हिन्दू हैं के बजाय गर्व से कहो कि हम भारतीय है-क्यों नहीं कहते?

महात्मा गाँधी ने कहा है कि दलित हिन्दू हैं किन्तु हिन्दू दलितों को कसाई क तरह बुचरते हैं।

पी. ए. सी.

यह भारतीय पुलिस बल के नीचे कार्यरत सैनिक हिन्दू पुलिस (आर एस. एस समर्थन) की एक जीती जागती मिसाल है। यह बल जिसको भारत सरका की ओर से ऊँचे वेतन मान व बेहतर सुविधायें मिलती हैं में आज तक ए भी गैर हिन्दू सदस्यों की भर्ती नहीं हुई।

इस विषय पर सुखवन्त सिंह ने "हिन्दुस्तान टाम्इस" में इस प्रकार कहा है

"अब यह किसी से छिपा नहीं है कि दिल्ली व मेरठ दोनों में मुख्य रूप मुसलमान मारे गये और ज्यादातर पीड़ित, पी ए सी व पुलिस द्वारा चलाई ग गोलियों से मारे गये। हमारे सरकार द्वारा नियंत्रित समाचार माध्यमों ने इस भ सत्य को छिपाने की कोशिश की।"

एक व्यक्तिगत जांच से पता चला है कि आर एस.एस. प्रमुख (पूर्व डी. आ जी.) ने मेरठ नरसंहार की योजना बनाकर उसे क्रियान्वित किया था।

मेरठ नरसंहार पर अन्तर्राष्ट्रीय मानवाधिकार आयोग की रिपोर्ट

रयूटर ने 19 नवम्बर 1987 को निम्नलिखित सूचना दीः

"एमनेस्टी इन्टरनेशनल ने यह निष्कर्ष निकाला है कि इसके प्रबल सबूत कि घटना के दिन मुसलमानों के नरसंहार व दूसरे दिन के दंगों में जानब कर निहत्ते नागरिकों पर गोली चलाने की जिम्मेदार पी. ए. सी. है। प्रम यह भी बताते है कि दंगों के सिलसिले में गिरफ्तार कम से कम पाँच मुसलम गिरफ्तार होने के बाद की चोटों के कारण जेल में मरे।"

ब्राह्मण बनिया समाचार माध्यमों ने इस समाचार को दबा दिया

ब्राह्मणों और बनियों द्वारा नियंत्रित अखबारों और सरकारी मीडिया ने एमनेस्टी इण्टरनेशल की रिपोर्ट को पूर्ण रूप से पचा लिया। यह रिपोर्ट सिर्फ पश्चिमी मीडिया में छपी।

नीची जाति के हिन्दुओं की दयनीय दशा

1. अछूत हिन्दू नहीं हैं

यह पुरी के शंकराचार्य कहते हैं जिन्हें ब्राह्मण अपने महान नेता के रूप में पूजते हैं (इण्डियन एक्सप्रेस अप्रैल 4, 1989) बाला साहब देवरस (आर. एस. एस. चीफ) और बाल ठाकरे (शिव सेना चीफ) को दलितों से सहयोग की भीख मांगने से पहले पुरी के शंकराचार्य के पास जाकर उनमें सुधार करना चाहिए। भारतीय संविधान कहता है कि दलित हिन्दू हैं लेकिन पुरी के शंकराचार्य इससे इनकार करते हैं।

मनु (हिन्दुओं की पवित्र पुस्तक मनु स्मृति का लेखक) कहते हैं कि

शूद्र कौआ, मेढक, बतख, छछूँदर, कुत्ता व बोझा ढोने वाले जानवरों की श्रेणी में आते हैं और इन पर इन्हीं श्रेणी की विकलांगतायें लागू होती हैं।

- शूद्रों को आत्म निर्भर, स्वतंत्र व सम्पति अर्जन करने की इजाजत नहीं दी जा सकती।
- विभिन्न जातियाँ विभिन्न दर से ब्याज का भुगतान करेंगी। सबसे नीची जाति सबसे ऊँची दर का ब्याज देगी।
- शूद्र की गवाही तभी स्वीकार की जायेगी जब एक द्विज की ओर से उसके समर्थन में गवाही दी जाये।
- भगवान राम ने शम्बूक की इसलिए हत्या कर दी क्यों कि वे शूद्र की हैसियत से वर्जित संस्कृत धर्म शास्त्र पढ़ते थे।

भारत में अपनी पकड़ मजबूत बनाये रखने के लिए भारतीयों को नाना प्रकार की जातियों में विभाजित कर दिया। अभी हाल के एक सरकारी सर्वेक्षण के अनुसार भारत में दो हजार जातियाँ हैं। प्रत्येक जाति अपने को दूसरी जाति से ऊँचा समझती है और एक जाति का मनुष्य दूसरी जाति की लड़की से शादी नहीं कर सकता। दो जातियाँ एक साथ नहीं बैठ सकती।

विस्तृत वर्णन के लिये स्वयं भारत सरकार की मण्डल रिपोर्ट को पढ़े।

2. बंधुआं मजदूर

ब्राह्मणवाद और वेदों ने भारत में बंधुआं मजदूरी प्रथा चलाई। आजादी के चालीस साल बाद भी हम नीची जाति के शूद्रों को बंधुआं मजदूरी से नहीं बचा पाये।

दस मई 1987 के टाइम्स ऑफ इण्डिया के अनुसार बंधुआं मजदूर मुक्ति मोर्चा के अध्यक्ष स्वामी अग्नि वेश ने कहा है कि बीस हजार लोगों से अधिक दलित आदिवासी पश्चिमी चम्पारन और उत्तरी बिहार के जिले गोपालगंज में आज भी इसका शोषण हो रहा है तथा वे गुलामी का जीवन व्यतीत कर रहे हैं। इसे उन्होंने अकाट्य तथ्यों द्वारा सिद्ध किया है।

हम बीसवीं शताब्दी में रह रहे हैं जहाँ विज्ञान और टेक्नालोजी ने अभूत पूर्व प्रगति की है। परन्तु भारत में आज भी ऐसे क्षेत्र हैं जहाँ के गाँवों में घुसते समय अछूतों को अपने जूते या चप्पलें अपने सिर पर रखने पड़ते हैं। होटलों व खानें पीने के स्थान भी नीची जाति के हिन्दुओं के लिये अलग बर्तन रखते हैं। प्रथम भारतीय गवर्नर जनरल व तमिलनाडू के पूर्व मुख्य मंत्री राजगोपाला चारी ने इस बात की वकालत की थी कि बेरोजगारी दूर करने के लिए लोगों को पीढ़ी दर पीढ़ी अपने पूर्वजों के पेशों को करना चाहिए। इस सुझाव को ब्राह्मणों/ आर एस. एस. के स्वामित्व के बहुत से अखबारों ने भूरि भूरि प्रशंसा की थी।

इस वकालत का कारण नीची जातियों को अपने तुच्छ व गन्दें कामों में बांधकर रखना मात्र था जबकि ब्राह्मणों ने अपनी ऊँची स्थिति कायम कर रखी थी। तथा कथित नीची जाति के हिन्दू आर्थिक तौर पर लाचार क्यों हैं?भारत आर्थिक दृष्टि से पिछड़ा क्यों है? यह इस लिये है क्यों कि ब्राह्मण दूसरी जाति की प्रगति नहीं होने देते। वे सरकार में ऊँचे पदों पर आसीन हैं तथा समाचार व शैक्षिक माध्यमों को नियंत्रित करते हैं। दूसरे लोग किस प्रकार प्रगति करें व जाति व्यवस्था के बंधनों को किस प्रकार तोड़े? इसमें कोई शक नहीं कि उनके पास उपलब्ध सभी सुविधाओं के कारण ही वे अच्छे डाक्टर व वैज्ञानिक पैदा करते है। निश्चय तौर पर यदि वे सभी सुविधायें नीची जाति के हिन्दुओं को उपलब्ध कराई जायें तो वे भी यही उपलब्धियाँ प्राप्त कर सकते है। बम्बई का रेड लाइट एरिया दुनियाँ का सबसे बड़ा वैश्यालय है जिसमें 95/

वैश्यायें इसी वंचित व पीड़ित समाज की हैं। इस सम्बन्ध में कोई भी हिन्दू लीडर न तो बात करना चाहता है और न उसे शर्म आती है।

3. नीची जाति के हिन्दुओं को सजायें

ब्राह्मणों को अपशब्द कहने वाले शूद्र की जीभ कटवा लेनी चाहिए। यदि शूद्र ऊपर के तीन वर्णो के बराबर तरक्की करता हो तो उसे बेंत से पीटना चाहिए। यदि शूद्र वेद को सुन ले तो उसके कान में पिघला हुआ गर्म रांगा भरवा देना चाहिए। यदि वह वेद का उच्चारण करे तो उसकी जीभ कटवा ली जाये और यदि वह वैदिक मंत्रों को याद करे तो उसके शरीर के टुकड़े-टुकड़े कर देना चाहिए (आपस्तम्ब धर्म सूत्र-111,10-26)।

यदि एक शूद्र घमंड से ब्राह्मण को धर्म की शिक्षा दे तो राजा उसके कान व मुँह में उबलता हुआ तेल भरवा दे। यदि ब्राह्मण हर सम्भव अपराध करे तब भी राजा उसे सजा न दे (मनुस्मृति 167-272)

वेदों और पुराणों के उपरोक्त सन्दर्भो से यह प्रश्न स्वाभाविक रूप से उठता है कि न्याय देने की यह पद्धति कितनी उचित है? अच्छा, इन पवित्र धर्म ग्रन्थों के अनुसार यदि एक ब्राह्मण पाप करता है तो उसे माफ करना चाहिए, लेकिन यदि एक नीची जाति का हिन्दू पाप करता है तो उसे इस पाप के मोचन हेतु बीस ब्राह्मणों को भोजन कराना चाहिए। क्या आप इसे उचित व सही न्याय कह सकते है ?

राष्ट्रपिता गाँधी की हत्या का जिम्मेदार कौन था? नि:सन्देह आप इसका उत्तर जानते हैं। आर एस. एस. के ब्राह्मण नाथूराम गोडसे ने भारत के महानतम् हिन्दू की हत्या की।

कुछ नवीन अत्याचार

दलित महिलाओं को सड़क पर नंगे होकर परेड करने पर मलबूर किया गया (करेन्ट 6-4-83) एक अनुसूचित जाति के व्यक्ति को भयंकर रूप से पीटा गया क्यों कि उसका कपड़ा ऊँची जाति के हिन्दू के बदन से छू गया था (टाइम्स ऑफ इण्डिया18-11-84) आंध्र प्रदेश के सिन्दूर व कर्मकेतु दलित नरसंहार की साजिश ऊँची जाति के हिन्दुओं ने रची थी। ऊँची जाति के हिन्दुओं ने दलितों के कुओं में मरे जानवर व मैला भर दिया। पुलिस ने कोई भी कार्यवाही नहीं (टाइम्स ऑफ इण्डिया18-11-84) एक दलित जिसने

मन्दिर में प्रवेश के अपने अधिकार को प्राप्त करने की कोशिश की तो वह बुरी तरह घायल कर दिया गया तथा उसके मुँह में मैला भर दिया गया। यह घटना सोराब तालूके के ठाकुर गाँव की है (डकन हेरल्ड 5-2-88) दलित औरतें बाढ़ के बचाव की नाव से पानी में फेंक दी गई (ब्लिट्ज 18-3-84) पूर्व प्रधान मंत्री श्रीमती इन्दिरा गाँधी ने 18 अगस्त 1970 को राज्य सभा में यह सूचना दी कि गत तीन साल में 1117 दलित देश के विभिन्न इलाकों में मारे गये।

धर्मान्तरण पर डॉ. अम्बेडकर के विचार

अपनी पुस्तक धर्मान्तरण क्यों करें? (दलित साहित्य एकेडेमी-बंगलौर) में डॉ. बाबा साहेब अम्बेडकर कहते हैं कि अस्पृश्यता हिन्दू समाज का एक स्थाई स्वरूप है। इन अत्याचारों से मुक्ति पाने के लिए उन्होंने राय दी कि व्यवस्था के शिकार लोगों को अन्य समाजों से अपना नजदीकी नाता जोड़ना चाहिए या किसी अन्य धर्म को अपना लेना चाहिए। उन्होंने कहा कि मुस्लिम ईसाई बौद्ध या सिक्ख धर्म में धर्मान्तरण्त से ही सांसारिक खुशियाँ हासिल हो सकती हैं क्यों कि धर्मान्तरित व्यक्ति ही अपनी रूचि के धर्म में निहित राजनैतिक सुरक्षा प्राप्त का सकता है।

आज केरल की 25 प्रतिशत आबादी ईसाइयों व बाकी 25 प्रतिशत मुसलमानों की है। ये ईसाई व मुसलमान रोम या सउदी अरब से नहीं आये। वे सभी धरती पुत्र दलित हैं। उन्होंने ने इस्लाम व ईसाई धर्म इसलिए स्वीकार किया क्यों कि दलितों की नंगी औरतों को ब्लाउज पहनने का अधिकार नहीं था। ईसाइयों और मुसलमानों ने उन्हें गरिमा व आत्म सम्मान दिया और इसलिए उन्होंने हिन्दू धर्म छोड़ा। धर्मान्तरण ने उनको मुक्ति दिलाई।

हमारी चुनौती

क्या एक भी सिक्ख मुस्लिम या ईसाई है जिसने अपनी इच्छा से हिन्दू धर्म स्वीकार किया हो। यदि कोई व्यक्ति हिन्दू बनने का निर्णय करे तो वह किस जाति को चुनेगा? यह निश्चय है कि वह ब्राह्मण नहीं बन सकता क्यों कि वेदों के अनुसार उसको ब्राह्मण बनने के लिए तीन जन्म लेना पड़ेगे। लेकिन क्या कोई ब्राह्मण उसको शूद्र बनने पर आपत्ति करेगा?

अफ्रीका का रंग भेद और ब्राह्मणवाद

भारत में 5 प्रतिशत ब्राह्मण 95 प्रतिशत भारतीयों पर शासन कर रहा है। अफ्रीका में पन्द्रह प्रतिशत गोरे 85 प्रतिशत कालों पर शासन कर रहे हैं। तब क्या भारत को दक्षिण अफ्रीका की रंग भेद की नीति की ओर उंगली उठाने का कोई अधिकार है? जबकि बदतर किस्म का भेद भाव भारत में बढ़ता जा रहा है।

हम लोकतंत्र और कानून के सामने समानता की बात करते हैं। लेकिन हम भारत की 80 करोड़ की एक तिहाई जनता को अछूत अदर्शनीय व असम्पर्क बनाये हुये हैं।

मीडिया और ब्राह्मण

भारत में प्रकाशित होने वाले अखवार पत्रिकायें आदि किसके है? नि:सन्देह ब्राह्मणों/आर एस. एस. के हैं।

अभी हाल के सर्वेक्षण द्वारा 81 प्रतिशत मीडिया ब्राह्मणों के हाथ में है। ब्राह्मणों के स्वामित्व के निम्नलिखित प्रसिद्ध व बड़े अखवार हैं। यहाँ बहुत से उन अखवारों का हवाला नहीं दिया जा रहा है जो ब्राह्मणों द्वारा वित्त पोषित हैं तथा उनकी कठपुतली का काम करते है :

इण्डियन एक्सप्रेस	-	93 प्रतिशत कर्मचारी ब्राह्मण
हिन्दू (मद्रास)	-	97 प्रतिशत कर्मचारी ब्राह्मण
टाइम्स आफ इण्डिया	-	90 प्रतिशत कर्मचारी ब्राह्मण

इन ब्राह्मणों ने आकाश वाणी व दूर दर्शन-दोनों में घुसपैठ कर रखी है। ज्यादातर समय में ब्राह्मणों और उनके कार्यक्रमों का प्रसारण होता है। सन् 1992 के प्रतिभूति घुटाले में शामिल सभी ब्राह्मण व बनियाँ थे। कोई मुसलमान सिक्ख ईसाई गिरफ्तार नहीं हुआ।

धनी ब्राह्मण

मनुस्मृति 8, 133 कहती है :

कि ब्राह्मणों पर टैक्स नहीं लगाना चाहिए तथा उसका पूरा खर्च रख रखाव सरकार द्वारा करना चाहिए।

नीची जाति के शूद्रों के बारे में मनुस्मृति 10, 129 क्या कहती है?

सक्षम होने पर भी शूद्र को सम्पति इकट्ठी नहीं करनी चाहिए। शूद्र द्वारा सम्पति इकट्ठा करने पर ब्राह्मण को ईर्षा डाह होता है तथा ब्राह्मण को इस सम्पति को जबरन छीन लेने का अधिकार है।

पहच्वानिश ब्राह्मण ग्रन्थ 3-1/11 कहता है:

यदि एक शूद्र सम्पति अर्जित कर भी लेता है तो वह हमेशा गुलाम ही रहेगा। उसका मुख्य कार्य ऊँची जाति के चरण पखारने का है।

ब्राह्मण तुलसीदास अपनी रामायण में लिखते है:

विद्वान व सर्वगुण सम्पन्न शूद्र का भी आदर सम्मान नहीं होना चाहिए।

जब अंग्रेजों ने भारत छोड़ा तो उनके स्वामित्व के सभी कारखानों को ब्राह्मणों ने ले लिया। यहाँ तक आज भी देश के बड़े उद्योगों में से 60 प्रतिशत पर ब्राह्मणों का कब्जा है।

देश को ब्राह्मणवाद के खतरे के सम्बन्ध में विस्तृत अध्ययन हेतु महान हिन्दू स्वामी धर्म तीर्थ द्वारा लिखित पुस्तक "हिस्ट्री आफ हिन्दू इम्पीरियलिज्म" को पढ़े (1992 का संस्करण, दलित एजूकेशन लिटरेचर सेन्टर, पोस्ट बाक्स नं. 1296 मद्रास)

याद रखें उनकी (ब्राह्मणों की)कुल भारत की जनसंख्या की 5 प्रतिशत जनसंख्या है।

मात्र 5 प्रतिशत ब्राह्मणों ने देश की 60% से अधिक सीटों पर कब्जा कर रखा है

1. लोक सभा	:	48 प्रतिशत ब्राह्मण
2. राज्य सभा	:	36 प्रतिशत ब्राह्मण
3. राज्यपाल/उपराज्यपाल	:	50 प्रतिशत ब्राह्मण
4. राज्यपाल/उपराज्यपाल के सचिव	:	54 प्रतिशत ब्राह्मण
5. यूनियन केबिनिट सेक्रेटरी	:	53 प्रतिशत ब्राह्मण
6. मंत्रियों के मुख्य सचिव	:	54 प्रतिशत ब्राह्मण

7. मंत्रियों के निजी सचिव	:	70 प्रतिशत ब्राह्मण
8. संयुक्त/अतिरिक्त सचिव	:	62 प्रतिशत ब्राह्मण
9. विश्व विद्यालयों के कुलपति	:	51 प्रतिशत ब्राह्मण
10. सुप्रीम कोर्ट के जज	:	56 प्रतिशत ब्राह्मण
11. हाई कोर्ट के जज/अतिरिक्त जज	:	50 प्रतिशत ब्राह्मण
12. राजदूत	:	41 प्रतिशत ब्राह्मण
13. सरकारी उपक्रमों के कार्यकारी अधिकारी		
(अ) केन्द्र	:	57 प्रतिशत ब्राह्मण
(ब) राज्य	:	82 प्रतिशत ब्राह्मण

(सौजन्य से वाइस आफ दि वीक अक्टूबर 1989)

अन्य क्षेत्रों में भी :

बैंकों	:	57 प्रतिशत ब्राह्मण
वायु सेवायें	:	61 प्रतिशत ब्राह्मण
आई पी एस अधिकारी	:	61 प्रतिशत ब्राह्मण
आई ए एस अधिकारी	:	72 प्रतिशत ब्राह्मण
आकाश वाणी और दूरदर्शन	:	83 प्रतिशत ब्राह्मण
सी बी आई कस्टम और एक्साइज	:	72 प्रतिशत ब्राह्मण

अपने देश के रोजगार की यह स्थिति है। रोजगार की क्रीम पाँच प्रतिशत ब्राह्मणों के कब्जे में है। क्या आप अपने खून पसीने के अनुरूप वेतन पाते है? शायद नहीं। क्यों कि आपके अन्न दाता ब्राह्मण हैं। आप याद रखें यदि आपने ने अपने को ब्राह्मण के नियंत्रण से मुक्त नहीं किया तो आपके पुत्र या नाती पोते इन्हीं या इनसे से भी अधिक बुरे दिन देखेगें।

आजादी के बाद भारत ब्राह्मणों द्वारा शासित है। वी. पी. सिंह को छोड़कर आज तक सभी प्रधान मंत्री ब्राह्मण रहे हैं (वी. पी. सिंह तभी प्रधान मंत्री बने जब उन्होंने 51 ब्राह्मणों का चरणामृत पिया तथा काशी की ब्राह्मण विद्वत्त परिषद ने उन्हें राजर्षि की उपाधि दी-अनुवादक)।

शिक्षा : जनता का मौलिक अधिकार

ब्रह्म सूत्र (1,3,9:38)का एक सूत्र देखें:

स्मृति का आदेश है कि शूद्रों को वेदों को पढ़ने सुनने व समझने से अवश्य रोका जाय।

मनुस्मृति 162-272 कहती है :

यदि एक शूद्र अभिमान पूर्वक ब्राह्मण धर्म की शिक्षा दे तो राजा उसके कानों और मुँह में उबलता हुआ गर्म तेल भरवा दे।

पूरी दूनियाँ में भारत ही एक ऐसा देश है जहाँ एक जाति ने शिक्षा को पूर्ण रूप से अपना एकाधिकार बनाया हो। भारत का औसत साक्षरता प्रतिशत 30 प्रतिशत है। लेकिन ब्राह्मण लगभग 100 प्रतिशत शिक्षित है।

यू एस ए व खाड़ी देशों के कुल भारतीय डाक्टरों में 67 प्रतिशत ब्राह्मण हैं। भारत की गरीब जनता की सेवा करने के बजाय इन डाक्टरों ने अमेरिका व अन्य पश्चिमी धनी देशों में काम करने का विकल्प चुना है।

उनका दावा है कि वे अशोक के समय से इस धरती पर मालिक कौम रहे हैं। उन्होंने पीढ़ी दर पीढ़ी अपने को शिक्षित बनाया और ब्राह्मण का अर्थ शिक्षित व्यक्ति से लगाया जाता है।

ब्राह्मणों तुम और तुम्हारें बच्चों का भविष्य

अरे हिन्दुओ तुम्हारे बच्चे शिक्षा में समान अवसर क्यों नहीं पाते? तथा डाक्टर, इंजीनियर, वकील, आई. ए. एस. व आई. पी. एस. क्यों नहीं बनते? क्या इसलिए यदि तुम्हारें बच्चें पढ़कर योग्य बने तो वे ब्राह्मणों के शासन से छुटकारा पा लेगें?

तुम क्यों नहीं सोचते विचारते और अन्य भाइयों से हाथ मिलाते तथा संगठित होकर धर्म के नाम पर ढाई गई निर्दयता अत्याचार व अमानवीयता के खिलाफ संघर्ष करते। अपनी निजी भलाई के लिए तुम सही दिशा में सोचना प्रारम्भ क्यों नहीं करते? यदि आप हिन्दू हैं तो आपके सभी हिन्दुओं को समान अधिकार मिलने चाहिए।

मौजूदा व्यवस्था में नीची जाति के हिन्दुओं के हिस्से में सिर्फ अशिक्षा, अज्ञानता, कर्ज व बीमारी आये। क्या नीची जाति के हिन्दू अपने बच्चों के

लिए एक अच्छी विरासत छोड़ते है? क्या वे अपनी शिक्षा के इस स्तर से अच्छी नौकरियाँ प्राप्त कर सकते है?

वास्तव में यह दुर्भाग्य की बात है कि गैर ब्राह्मण अपनी उस शक्ति व क्षमता का अनुभव नहीं करते जो उनके निजी लाभ के लिए प्रयुक्त की जा सकती है। ऐसा दिखता है कि ब्राह्मण लोकतंत्र और धर्म निर्पेक्षता नामक शब्दों से जनता को मूर्ख बना रहा है। क्या भारत वास्तव में धर्म निर्पेक्ष है? क्या बहुसंख्यकों के बजाय अल्प संख्यकों के नाम पर लोकतंत्र का दुरूपयोग नहीं हुआ? लोगों की अशिक्षा और अज्ञानता का अनुचित ढंग से प्रयोग किया गया।

बाबरी मस्जिद पर डा. एस. गोपाल के विचार

जब भारत धर्म निर्पेक्ष देश है तो ब्राह्मणों की पार्टी आर एस. एस. ने 6 दिसम्बर 1992 को बाबरी मस्जिद को क्यों ढाया? यद्यपि प्रत्येक इतिहासकार ने यही कहा है कि यह मस्जिद है तथा वहाँ हिन्दू मन्दिर का कोई प्रमाण नहीं है। जवाहरलाल यूनीवर्सिटी नई दिल्ली के प्रोफेसर सर्वपल्ली गोपाल जो सर्वपल्ली राधाकृष्ण के पुत्र व ख्याति प्राप्त इतिहासकार व इमेरिटस साइंटिस्ट है, ने कहा है कि वहाँ पर कोई ऐतिहासिक प्रमाण नहीं था जो यह सिद्ध कर सके कि अयोध्या की विवादास्पद मस्जिद के नीचे किसी मन्दिर के अवशेष थे।

तिरूपति में एस. बी.यूनीवर्सिटी में एक इतिहास के रिफ्रेशर कोर्स के उद्घाटन के दौरान प्रश्नोत्तर काल में प्रोफे. गोपाल ने बताया है कि बाबरी मस्जिद का गिराना छिुरता व असभ्यता पूर्ण कार्यवाही है जिस पर प्रत्येक भारतीय को लज्जा आनी चाहिए। यदि बाबर ने मन्दिर ध्वस्त करके मस्जिद भी बनाई होगी तब भी सभ्य होने के नाते भी किसी भी व्यक्ति को भूत काल की बातों को नहीं सुधारना चाहिए।

आप मात्र इनको ऐतिहासिक साक्षों को मानकर उन्हें ज्यों का त्यों छोड़ दे। ढांचे को गिराने का कोई औचित्य नहीं था (डकन हेरल्ड बंगलौर फरवरी 10,1993) ।

अध्याय–3

हिन्दू धर्म बेनकाब

ब्राह्मण हमेशा दूसरे के धर्मों की आलोचना निन्दा व मखौल उड़ाते हैं। उनकी यह आलोचना व मखौल तर्कहीन और अस्वीकार्य है।

अमेरिकन विद्वान डा. चेरिस ने अपनी आत्म कथा में कहा है कि हिन्दू धर्म की परिभाषा करना बहुत आसान है। उन्होंने लिखा है कि हिन्दू का अर्थ है कि "वह व्यक्ति जो भगवान के नाम पर कोई भी और प्रत्येक वस्तु पर विश्वास कर लेता है तथा कभी उसकी विश्वस्यनीयता पर प्रश्न नहीं करता"।

ब्राह्मण दावा करते है कि भगवान राम मानव जाति की कठिनाइयों व दुखों को समझने के लिए मनुष्य के रूप में अवतार लेते हैं। क्या वास्तव में भगवान को मनुष्य रूप में अवतार लेना आवश्यक है? क्या वह अपनी बनाई हुई श्रष्टि के बारे में नहीं जानता। भगवान गधा या काकरोच बनकर इन प्राणियों के दुखों को क्यों नहीं समझना व अनुभव करना चाहता है?

भगवान राम

राम वाल्मीकी रामायण के केन्द्रीय चरित्र हैं। राम बनारस के राजा दशरथ के पुत्र हैं। दशरथ के सैकड़ो रखैलों के अलावा कौशिल्या केकई व सुमित्रा–तीन रानियाँ थी। रामायण के अनुसार राम ने अपने जीवन का अधिकतम समय अपनी पत्नी सीता को रावण के बन्धन से मुक्त करने में त्रिताया। वही राम हर अवसर पर भरपूर विनोद व भोगमय जीवन व्यतीत किये।

राम मारीच द्वारा मूर्ख बनाये गये

जब राम और सीता बनवासी थे। तो मारीच ने हिरण का रूप धारण करके भगवान को चकमा दिया यद्यपि राम ईश्वर थे फिर भी वे मारीच के धोखे व कपट को नहीं परख पाये।

बारह वर्ष राम के लिये लेकिन एक दिन रावण के लिये

अपनी पत्नी सीता को रावण के बन्धन से मुक्त कराने के लिये राम ने बन्दर भगवान हनुमान की मदद की। हनुमान सीता को वापस लेने के लिये इस शर्त

पर राजी हुये कि इसके बदले में राम को उनके दो जुड़वां भाइयों को मारना पड़ेगा। हनूमान को अपना मिशन पूरा करने हेतु पुल बनाने में बारह साल लगे। जब कि रावण सीता को एक दिन में ही वायु मार्ग से लंका ले गया। राम ने जो पुल बनवाया वह पुल कहाँ है? राम ज्यादा शक्तिशाली हैं या राक्षस रावण। क्या एक भगवान को दूसरे भगवान की हत्या करने के लिये तीसरे भगवान से मदद लेनी चाहिए?

- यदि हनुमान विशाल पहाड़ों को लेकर उड़ सकते थे तो उन्हें तुरन्त ही राम को वायुमार्ग से लंका में उतार देना चाहिए था ताकि सीता की तुरन्त रक्षा हो जाती।

- कौन जानता है कि इन बारह वर्षो के दौरान रावण ने सीता के साथ क्या किया होगा। स्वाभाविक रूप से एक राक्षस ने राक्षसी कार्य ही किया होगा।

भगवान राम की मदद करने से पहले हनूमान ने अपने निजी जुड़वां भाइयों को पीछे से हमला करके मरवाया। इसके बाद ही हनूमान ने भगवान राम की मदद की। एक भगवान को अपने व्यक्तिगत लाभ के लिये इस प्रकार की आपराधिक कार्यवाही क्यों और कैसे करनी चाहिए?

गोमांस भक्षक राम

जब राम को बनवास जाने के लिये कहा गया तो उन्होंने अपनी माता को व्यथित होकर कहा "यह अध्यादेश जारी हुआ कि मुझे राजधानी, राजकुमारों के ऐशो आराम व मांस के स्वादिष्ट व्यंजन छोड़ने हैं (अयोध्या काण्ड 20, 26, 94 वाँ अध्याय)

राम की बहुत सी पत्नियाँ

अपने वाल्मीकी रामायण के अनुवाद में श्री. सी. आर. श्रीनिवास अयंगार कहते है: यद्यपि राम ने सीता से शादी की इसलिये उन्हें रानी होना चाहिए था लेकिन उन्होंने शाही रीति रिवाजों के अनुरूप मैथुन भोग हेतु बहुत सी औरतों से शादी की (अयोध्या काण्ड 8 वाँ अध्याय, पृष्ठ 28)।

("राम की पत्नियाँ" नामक वाक्यांश कई जगह प्रयुक्त हुआ है)

राम द्वारा अपने पिता का अपमान

राम ने पिता को मूर्ख निर्बुद्धि कहा (अयोध्या काण्ड 53 वाँ अध्याय)।

राम द्वारा महिलाओं और नीची जातियों का अपमान :

राम ने बहुत सी महिलाओं की नाक, स्तन व कानों को काटा, कुरूप व अंग भंग करके यातनायें दी (सूर्पनखा, अयोमुखी, ताड़का)

राम ने कहा कि औरतों पर विश्वास नहीं किया जाना चाहिए तथा रहस्य को अपनी पत्नी से गोपनीय रखना चाहिए (आयोध्या काण्ड अध्याय 100)।

राम ने शम्बूक की हत्या कर दी क्यों कि वह तपस्या कर रहे थे जो एक शूद्र के लिये वेद विरूद्ध थी। (उत्तर काण्ड अध्याय 76)।

अपने हाथ की ओर निहारते हुये राम ने संस्कृत का यह नारा लगाया कि "अरे मेरे दाहिने हाथ तुम इस तपस्वी शूद्र को बिना किसी झिझक के मारो क्यों कि मरे हुये ब्राह्मण के लड़के को दुबारा जीवित करने का एक मात्र उपाय शूद्र की हत्या करना है। क्या तुम राम के अंग नहीं हो? (वाल्मीकी रामायण)

टिप्पणी

ये राम जिन्होंने तपस्या करने मात्र से शम्बूक की हत्या कर दी, को विष्णु का अवतार कहा गया। यदि आज राम जैसे राजा जिन्दा होते तो आज शूद्र कहे जाने वाले लोगों का क्या होता!

राम की मृत्यु

राम एक आम आदमी की भाँति नदी में डूबकर मरे (उत्तर काण्ड अध्याय 106)। एक भगवान कैसे मर सकता है? तब दुनियाँ के काम काज की कौन देख भाल करेगा?

सीता बनाम राम

राम ने सीता से कहा "तुम एक औरत को बेंचने वाले आदमी से बढ़कर नहीं हो जो अपनी पत्नी को अपनी जीविका चलाने के लिये किराये पर उठाता है। तुम मेरी वैश्यावृत्ति से फायदा उठाना चाहते हो। सीता ने राम से कहा कि तुम्हारे पुरुषत्व, शिष्टाचार व आकर्षण में कमी है। और "उसने अपने पति को गोबर गणेश कहा"

जैसे ही सीता रावण के महल में पहुँची उसका रावण के प्रति प्रेम और अधिक बढ़ता गया (अरण्य काण्ड अध्याय 54)

अन्त में जब राम ने सीता की अग्नि परीक्षा लेना चाही तो उसने उससे मना कर दिया तथा अपने प्राण त्याग दिये (उत्तर काण्ड अध्याय 97)।

जब राम की बहिन ने राम से कहा अरे ज्येष्ठ भ्राता! अपने से तुम अधिक सीता से कैसा प्यार करते हो? आओ मेरे साथ और देखो आपकी पत्नी के दिल में वास्तव में क्या है। अभी तक वह अपने यार रावण को नहीं भूल सकी। हाथ के पंखे पर रावण का चित्र बनाकर उसे अपनी छाती से चिपका कर दबाये हुये है। वह आँखे बन्द करके रावण के वैभव को याद करके प्रशन्न हो रही है। राम सीता के महल गये। वहाँ वह पंखे पर बने रावण के चित्र को अपनी छाती से दबाये हुये सोते हुये मिली (यह श्रीमती चन्द्रावती द्वारा लिखित बंगाली रामायण के पृष्ठ 199 व 200 में लिखा हुआ है।)

यदि राम सीता से बहुत प्यार करते थे और सीता एक आदर्श हिन्दू नारी है तो क्या भारतीय नारी अपने को अपने पति द्वारा वर्षों तक जंगल में छोड़ देने को बरदाश्त कर सकती है। राम ने सीताको गर्ववती होने पर भी जंगल में छुड़वा दिया जहाँ उसके दो बच्चें पैदा हुये (बी. आर. अम्बेडकर: हिन्दुत्व की पहेली महाराष्ट्र सरकार का प्रकाशन 1987)।

भगवान राम के बारे में नेता क्या कहते हैं?

ये राम रामायण के राम नहीं है - महात्मा गाँधी

रामायण और महाभारत अरबों की अलाव तापने की कहानियों से अधिक कुछ भी नहीं हैं -नेहरु

राम भगवान नहीं बल्कि वह एक अभिनेता हैं-चक्रवर्ती राजगोपालाचारी भारत के प्रथम गवर्नर जनरल व महान ब्राह्मण नेता

रामायण दैविक कहानी न होकर यह सिर्फ एक साहित्य है-कलियुग कम्बन् टी. के. चितम्बकरनाथ मुदलियार

बाबरी मस्जिद को उन राम भक्तों ने ढा दिया जो दावा करते हैं कि यही उनकी जन्म भूमि है

भगवान कृष्ण :

भगवान कृष्ण नंगी जवान लड़कियों को देखने के बहुत शौकीन थे। एक बार

नहा रहीं कुछ कुवारी लड़कियों का पूरा नजारा देखने के लिये वे इस हद तक चले गये कि उनके कपड़े मात्र प्राकृतिक दृष्टि दर्शन हेतु पेड़ की चोटी पर छिपा दिये। क्या उन्हें नंगी औरतों की ओर देखने की दैवी छूट थी?

हिन्दुओं की पवित्र पुस्तक गीता में आया है कि जब इन नहा रही नीची जाति की लड़कियों ने अपने कपड़े वापस करने की प्रार्थना की तो भगवान कृष्ण ने अपने अंगों को ढकने के बजाय उन्हें अपने हाथों को ऊपर उठाकर पानी से निकलकर बाहर आने की शर्त रखी।

मेरे भोले हिन्दू भाइयों क्या यह एक भगवान का कृतित्व है? क्या इस भगवान को इस तरह की हरकतों में लिप्त रहना चाहिए? क्या हिन्दू मातायें अपने बच्चों को भगवान कृष्ण का अनुशरण करते हुये बरदाश्त कर पायेंगी?

राम और कृष्ण की पहेली

दिनांक 12-11-87 को टाइम्स आफ इण्डिया ने सूचना दी कि महाराष्ट्र सरकार के शिक्षा विभाग ने हिन्दुत्व की पहेली नामक शर्षिक से डा. अम्बेडकर द्वारा लिखित पुस्तक प्रकाशित की।

रिपोर्ट में बताया गया कि इस पुस्तक के विभिन्न बयानों-विशेषकर लेखक के राम और दशरथ के बहुत सी पत्नियाँ और कृष्ण के चरित्र के अवलोकन पर कुछ ब्राह्मण बहुत क्रोधित हुये (राम और कृष्ण की पहेली नामक पुस्तक दलित साहित्य एकेडमी बंगलौर 56 के पास उपलब्ध है)

भगवान गणेश और देवी पार्वती

हिन्दू धर्म के अनुसार भगवान शिव का सिर गंगा नदी का उद्‌गम स्थल है और उनका सिर वह स्थान है जहाँ चन्द्रमा भी स्थित है (यदि वास्तव मे यह हकीकत थी तब अमेरिका ने अन्तरिक्ष यात्री नील आर्मसस्ट्राँग को 240000 मील दूर चन्द्रमा के पास क्यों भेजा?)

पुराणों के अनुसार शिव की पत्नी देवी पार्वती ने शिव जी से एक बच्चे को प्राप्त करने की अनुमति मांगी। जब शिव जी ने मना कर दिया तो पार्वती जी ने शिव के बदन में लगी भभूत को लेकर भगवान गणेश जी को पैदा कर दिया (ई. वी. आर. पेरियर ने इन भगवान को मिट्टी का माधव कहा है)

बाद में गलती से भगवान शिव ने अपने निजी पुत्र की गर्दन काट दी। एक भगवान इतनी मूर्खता पूर्ण गलती कैसे कर सकता है? इस प्रकार का भगवान आपकी समस्याओं का निराकरण करेगा या उन्हें और अधिक गम्भीर या जटिल बनांयेगा?

शिव ने अपनी गलती को सुधारने के लिये एक हाथी के बच्चें की गर्दन काटकर सिर को अपने पुत्र के धड़ पर प्रत्यारोपित कर दिया तब वे हाथी के सर वाले भगवान गणेश कहलाये। उनकी मूर्तियाँ अक्सर नदी के किनारे पाई जाती है जहाँ यह कहा जाता है कि वह अपनी माँ की शक्ल सूरत की दुलहन को देखते हैं। (इस सम्बन्ध में एक दूसरी कहानी है जो मर्यादा व शालीनता के हित में यहाँ नहीं छापी जा सकती)।

हिन्सा की देवी काली

प्रेस ट्रस्ट आफ इण्डिया की एक रिपोर्ट में कहा गया है कि गत तीन साल के दौरान 2500 से अधिक छोटे लड़के और लड़कियों की भारत में काली देवी को बलि चढ़ाई गई। एक ए.एफ.पी. की ताजा रिपोर्ट कहती है कि सैकड़ों लड़के व कुवांरी लड़कियों की प्रतिमाह काली देवी को बलि चढ़ाई जाती है। एक मामले में राम सेवक ने दिल्ली में दिन दहाड़े अपने आठ साल के बच्चें की बलि चढ़ा दी क्यों कि उसको काली देवी ने बताया था कि ऐसा करने से उसकी मनोकामना पूरी होगी और बच्चा भी जिन्दा हो जायेगा। खून की प्यासी काली की भारत के प्रत्येक कोने में पूजा की जाती है।

काली शंकर जी की छाती पर पैर फैलाये हुये नंगी मूर्ति नुकीलें व बड़े दोतों के बीच से बाहर खून टपकाते हुये निकली जीभ के साथ खड़ी हैं। उनके हाथ में एक फन्दा, एक कटे सिर के बाल पकड़े हुये, एक खून में सना हुआ चापड़ तथा अन्य बहुत से कटे हुये मुन्ड। उसे दुर्गा देवी, शक्ति माता, उमा व पार्वती भी कहते हैं।

काली बारी दिल्ली का पुजारी कहता है कि काली देवी को एक बच्चे की बलि चढ़ाने से मनुष्य को पुत्र रत्न अवश्य प्राप्त होते है। अपना हित साधन या प्रसन्न करने के लिए इन देवी देवताओं को नर बलि भी चढ़ाई जाती है। बिहार के पुलिस प्रमुख जे. सहाय ने कहा है कि **"हमने नर बलि को रोकने**

की भरपूर कोशिश की। लेकिन संस्था क्या कर सकती है जब पूरा गाँव नर बलि के शिकार व्यक्ति को चुनता है और उसके माता पिता की सहमति से उसका गला काट डालता है" बिहार के मशहूर वकील उमाकान्त चतुर्वेदी ने कहा "कि कानून के तहत नर बलि को हत्या माना गया है लेकिन हत्यारा जो कभी नहीं पकडा जाता - वह हमेशा स्थानीय पुजारी होता है।" उन्होने आगे कहा "उस समय स्थानीय पुलिस देवी देवताओं के डर के कारण कोई रुचि नही लेती।"

सन् 1972 की मशहूर नर बलि की घटना हुई थी जिसने महाराष्ट्र प्रदेश के एक प्रसिद्ध नेता ने एक खजाना पाने के लिए भान्जा की ग्यारह कुवारी लड़कियों का खून अर्पित किया था। उसको खजाना नही मिला लेकिन इस अपराध में चार व्यक्तियों को फांसी हुई तथा मुख्य अभियुक्त राजनैतिक दबाव के कारण बच गया था।

कुछ समय पूर्व सिद्धार्थ और रवि नामक दो भाइयों ने अपनी बहिन शोभा को नहाने के बाद केरल में पास के मन्दिर में आने को कहा। दिल को दहलाने की घटना हुई। दोनों भाइयों ने उसको तलवारों व लोहे के सरियों से, मन्त्र पढ़ते हुये टुकड़े-टुकड़े कर डाला। वेदना से कराहती हुई उसने दया की भीख मांगी लेकिन उसको टुकड़ों-टुकड़ो में काटकर प्रत्येक टुकड़े को आग में जला डाला। इन भाइयों ने यह सब छिपे खजाने को पाने के लिये किया। पहले उन्होंने किसी अन्य शिकार को ढूड़ने की कोशिश की लेकिन जब उन्हें कोई कुवारी लड़की नही मिली तो उन्होने अपनी बहिन की बलि चढ़ाई।

वेदों ने सिर्फ ब्राह्मणों के बच्चों को ही नर बलि चढ़ाने से मुक्त रक्खा है।

क्या यही हिन्दू धर्म है? मुझे शर्म आती है।

पंचाली देवी

इस देवी ने पाँच भाइयों से शादी की थी। उसके बच्चे का असली पिता कौन था? डा. चार्ल्स कहते हैं कि निकट सम्बंधियों से मैथुन व्यभिचार हिन्दू धर्म शास्त्रों में सामान्य रुप से मिलते हैं।

"हिज होलीनेस" पुरी के शंकराचार्य!

ब्राह्मणों के आध्यात्मिक नेता पुरी के शंकराचार्य स्वामी निरंजन देव तीर्थ ने

"कल्याण" नामक हिन्दी मासिक पत्रिका को एक इण्टरव्यू दिया था जिसका सारांश यहाँ दिया जा रहा है:

प्रश्न : महाराज जी! यदि एक शूद्र धर्म परायणता व सदाचार का जीवन व्यतीत करता है तो क्या वह ब्राह्मण बन सकता है?

उत्तर : यदि एक शूद्र अपने नियम धर्म में रहता है और वर्णाश्रम धर्म की सीमा के अन्दर रहता है तो वह अगले जन्म में ब्राह्मण बन सकता है परन्तु इस जन्म में कभी नही बन सकता।

प्रश्न : क्या जाति व्यवस्था में विश्वास करना अनिवार्य है?

उत्तर : बहुत अनिवार्य है बिना जाति व्यवस्था में विश्वास किये कोई भी प्रगति नहीं हो सकती।

प्रश्न : महाराज! क्या जाति का परिवर्तन गुणों और कर्म पर आधारित है?

उत्तर : **नही, यह जन्म पर आधारित है, गु ा कर्मो पर नहीं, जाति जन्म पर आधारित है और गुणकर्म उसे नही बदल सकते। यह अखण्डनीय सत्य है।** अप्रैल 1969 को पटना में विश्व हिन्दू परिषद (आर एस एस की शाखा) का उद्घाटन करते हुये इन्ही शंकराचार्य जी ने कहा था :

"छुआछूत हिन्दू समाज व्यवस्था का अभिन्न अंग है। मैं इस विश्वास पर अटल रहूँगा चाहे वे मुझे फांसी पर लटका दें।"

अरे नीची जाति के हिन्दुओं देखो मनुस्मृति (अध्याय VIII श्लोक 4,14) क्या कहती है?

"गुलामी शूद्रों के साथ ही पैदा हुई है उससे उसको कोई भी छुटकारा नहीं दिला सकता।"

सतीप्रथा के रक्षक शंकराचार्य

ब्राह्मण जनित मनुस्मृति अध्याय 19, श्लोक 413 में पुनः कहती है :

"अन्नत काल से श्री ब्रह्मँ जी का यह उद्देश्य रहा है कि अछूतों को गुलाम बनकर पैदा होना चाहिए तथा गुलाम के रूप में ही मरना चाहिए"

एक अन्य अवसर पर आचार्य श्री शंकराचार्य ने कहा है कि "विधवा होने पर

सती होने के अलावा औरत के सामने और कोई रास्ता नहीं है और उन्होंने कहा कि वे सती प्रथा विरोधी कानून का तब भी विरोध करेंगे यदि भारत सरकार उनको फांसी पर लटका दे।

भारतीय संविधान के अनुसार बजाय उसको जेल में भेजने के इस धर्मान्ध पुजारी के यहाँ चोटी के ब्राह्मण नेता जाकर उसकी पूजा करते है।

भगवान रजनीश

ये और कोई नहीं सिवाय अन्तर्राष्ट्रीय ख्याति प्राप्त सेक्स स्वामी जी। ये रात्रि उत्सव समेत स्वच्छन्द यौनाचार का उपदेश देते हैं और कहते हैं मरने से पहले जितना मानव चरम सीमा तक सम्भव हो सेक्स भोगे। उनका दावा है कि यही परम आनन्द दायक स्वर्ग का सुख है। वह एक सच्चे स्वामी है क्यों कि वे मात्र उपदेश ही नहीं देते बल्कि स्वयं सक्रिय रुप से उसका पालन करते हैं जिसका वे उपदेश देते हैं। उनके अनुयायी ज्यादातर ब्राह्मण हैं।

वे धन दौलत और भौतिकवाद का भी उपदेश देते हैं। कोई भी आश्चर्य नही कि इन मानव भगवान के पास 90 रोल्स रायस कारें और अमेरिका में एक पशुशाला है। राजनीश और उनके पवित्र समूह सेक्स जनित रोगों से प्रभावित होने के लिए मशहूर है।

चन्द्रा स्वामी

यह विश्व स्तरीय एवं विवादास्पद गॉड मैन हैं जो प्रधानमंत्री पी. वी. नरसिंहाराव के गुरु है, का बोफोर्स जैसे घोटालों से सम्बन्ध है। इनका अपना अधिकतम समय हालीवुड सितारों, अरब पतियों और अन्य ख्याति प्राप्त लोगों की व्यक्तिगत समस्याओं को हल करने में गुजरता है। यदि उन्हें कोई तकलीफ होती है तो वह अविलम्ब चार्टर्ड प्राइवेट जेट विमान से उसकी मदद के लिए पहुँचते हैं। वे अन्तर्राष्ट्रीय पत्रिकाओं जैसे न्युज वीक और टाइम्स में स्थान पाने के लिए फोटोग्राफरों के कैमरों के सामने जाने का कोई अवसर नही खोते। वे भारत की भी कुछ समस्याओं का समाधान क्यों नही करते?

कुछ अन्तर्राष्ट्रीय धोखाधड़ी की घटनायें जो अभी हाल में प्रकाश में आयी हैं, उसमें भारत की पूर्व ब्यूटी क्वीन पामेला बोर्डेस और एक ख्याति प्राप्त वैश्या हैं जिनको इन स्वामी जी ने भोगा है।

धीरेन्द्र ब्रह्मचारी

एक होली मैन को बन्दूको के कारखाने की क्या जरुरत पड़ गयी। स्वामी जी की रक्षा के लिये एक लाइसेन्सी बन्दूक का तो औचित्य है लेकिन इन स्वामी जी को अपनी रक्षा के लिये एक पूरी गन फैक्टरी की जरुरत है? उन्होंने अपनी सुविधा के लिये एक हवाई जहाज की हवाई पट्टी तक बना रखी है। (उनके सहयोगियों में नानी पालकी वाला और मनोज कुमार हैं)

अन्य होली मैनों (पवित्र आदमियों) की तुलना में निम्नलिखित होली मैनों की लेखक बहुत अधिक सराहना करता है:

1. रजनीश - सेक्सी होली मैन
2. महर्षि - उड़ने वाले होली मैन
3. चन्द्रा स्वामी - होलीवुड होली मैन
4. सत्य सांई बाबा - जादुई होली मैन
5. स्वामी धीरेन्द्र ब्रह्मचारी - गाडली मैन बन्दूक

हरे राम हरे कृष्ण आन्दोलन

यह समूह यू. एस.ए. और पश्चिमी देशों में नामी नशेबाजों को आकर्षित कर रहा है। काशी के हिन्दू सन्यासी की भाँति ये चिलम पीते व विभिन्न प्रकार के सभी नशीलें पदार्थों का सेवन करते हैं।

यू. एन. आई. की 15-8-87 की प्रेस रिपोर्ट ने "सेक्ट चीफ इस कनविक्टिड किलर" नामक शीर्षक से कहा है कि "हरे राम हरे कृष्ण के प्रमुख हत्या व नशीलें पर्दोथों की तस्करी के दोषी ठहरायें गये हैं।

अड़तीस वर्षीय स्वामी थोमस ड्रेसर लास एन्जिलिस में स्टीवन ब्रायन्ट की हत्या के अपराध में वेस्ट वर्जीनियाँ स्टेट पेनीटेन्टियरी की जेल में बन्द हैं। मादक पदार्थों को बनाने व वितरण करने के अपराध में ये स्वामी जी 1987 में भी गिरफ्तार हुये थे तथा जनवरी 1983 में एक कृष्ण भक्त की हत्या के दोषी ठहराये गये थे। रिपोर्ट ने अपने अन्तिम निष्कर्ष में कहा है कि, सन् 1977 से हरे राम हरे कृष्ण आन्दोलन के जनक द्वारा बताये गये ग्याहर मुख्य गुरु बाल दुरुपयोग, ड्रग डीलिंग तथा स्वच्छन्द सम्भोग में लिप्त होने के कारण हटाये गये। इस सम्प्रदाय में सत्ता के संघर्ष की रस्सा कशी चल रही है।

ये हिन्दू अध्यात्मिक नेता जो स्वामी आचार्य आदि कहे जाते हैं, वे सभी ठग हैं। दिसम्बर 6,1992 को बाबरी मस्जिद को ढाते समय इन हिन्दू नेताओं ने एक ऊँची जाति की हिन्दू पत्रकार कुमारी रुचिरा गुप्ता से छेड़खानी की जिससे सम्बन्धित साक्ष्य उन्होंने प्रेस कौंसिल में दिये थे। वे दिल्ली स्थित "बिजनिस स्टेन्डर्ड" पत्रिका की संवाद दाता हैं।

वे सभी पत्रकार जिन्होंने 6 दिसम्बर 1992 को अयोध्या में डकैती मारपीट व छेड़खानी की शिकायत की थी, सिर्फ हिन्दू संवाद दाता थे।

महत्वपूर्ण सवाल

1. हिन्दुओं ने भारत के लिए क्या किया है?
2. क्या हिन्दू के पास आज की समस्याओं-शराब खोरी, नशाखोरी, डायवोर्स, आत्म हत्या, अशिक्षा बेरोजगारी का उत्तर हैं?
3. क्या ये भगवान चलते फिरते व सोचते हैं?
4. क्या वे हमला होने पर अपने को बचा सकते हैं? या तोड़े जाने पर अपनी मरम्मत स्वयं कर सकते हैं?
5. क्या आप नहीं सोचते कि इन मानव द्वारा निर्मित चीजों को पूजना मूर्खता है?
6. क्या भारत 95 प्रतिशत हिन्दुओं का या 5 प्रतिशत ब्राह्मणों का?
7. क्या हिन्दुत्व भारत में स्वयं पैदा हुआ या वह आर्यों के साथ खैबर दर्रे से आया?
8. क्या एक व्यक्ति धर्मान्तरित होकर ब्राह्मण बन सकता है?
9. भारत के आर्यों (ब्राह्मणों) और जर्मनी के आर्यों (हिटलर के नाजी) में आपसी क्या सम्बन्ध हैं?
10. ब्राह्मण और नाजी स्वास्तिक नामक चिन्ह क्यों रखते हैं? (दक्षिण अफ्रीका में जातिवादी नेशनल फ्रन्ट का चिन्ह देखें)
11. अपने से सवाल पूछें कि आपका भगवान कौन है? क्या शिव हैं जो चन्द्रमा व गंगा नदी को अपने सिर पर लादे हैं और जो अपने निजी पुत्र को नहीं पहचान सके या वे राम हैं जो जटायु के छल को नहीं परख सके और जिन्होंने दूसरे भगवान की हत्या की और क्या वो रसिया कृष्ण हो सकते हैं।

ब्राह्मणों की साजिश

अन्य समाज पर प्रभुसत्ता बनाये रखने की साजिश व दुरभि सन्धि ब्राह्मणवाद का मुख्य उद्देश्य रहा है। ब्राह्मणवाद आर्य मानव समूह की दुरभि सन्धि है जो अतृप्त आधिपत्य सेक्स व धन की पिपासा हेतु धर्म के नाम पर उपेक्षित व वंचित जनता पर शासन करते रहना चाहता है।

भारत के चोटी के पत्रकार(एक हिन्दू) वी. टी. राजशेखर की पुस्तक ब्राह्मणवाद, फासीवाद का पिता, जातिवाद नाजीवाद व जनेऊवाद (दलित साहित्य एकेडेमी 1993) को पढ़े।

पवित्र धर्म ग्रन्थों की विषय सूची, लहजा और विचारों से स्पष्ट होता है कि इन्हें ब्राह्मणों ने धर्म के नाम पर लिखा है और पनपाया है। ये पुस्तकें किस प्रकार ईश्वर की वाणी हो सकती हैं। उनमें सबसे अधिक अश्लील किस्म का साहित्य, सर्वाधिक दुराचारी व्यवहार और बलात्कार, निर्दयता, रक्त पिपासा, भूख व दूसरों पर हावी होना, पर आधारित जीवन पद्धति मिलती है।

क्या आपने एक भगवान द्वारा दूसरे भगवान की पत्नी को चुराते देखा है। और हिन्दुत्व इस प्रकार के भगवानों से भरा पड़ा है

हिन्दू ब्राह्मण नहीं हैं ब्राह्मण हिन्दू नहीं हैं। कम से कम स्वयं ब्राह्मणों द्वारा तैयार व लिखी गई पुस्तकों से यह बात सिद्ध है।

आर्य घुसपैठिये हैं

किसी भी शंकराचार्य ने आज तक नहीं कहा कि वह हिन्दू है

हिन्दू हिन्दुस्तान के मूल निवासी हैं। वही लोग जो सिन्धु घाटी सभ्यता के सच्चे निर्माता हैं जो मानव जाति के पूरे इतिहास में मानव समाज के उत्थान की सबसे अच्छी मिसाल समझी जाती है।

बरबर ब्राह्मण (आर्य) हिमालय के पार की बंजर भूमि से आये और संस्कृति के महान स्मारकों को नष्ट कर दिया और भारत के मूल निवासियों को पीछे ढकेल दिया। ब्राह्मण की षणयंत्र पूर्ण साहित्यक पवित्र पुस्तकें गुलामी की संदेश वाहक हैं। जिस प्रकार यहूदियों ने मानवता यहूदी और गैर यहूदी में बांटी उसी प्रकार ब्राह्मणों ने भी किया। इन किताबों में पूरी दुनियाँ को ब्राह्मण और

गैर ब्राह्मण में बांटा गया। गैर ब्राह्मण को ब्राह्मण मालिक के अधीन आंतरिक गुलाम बनकर रहना था जिसने ऐतिहासिक तौर पर इस भूमि पर कब्जा कर रखा है (महात्मा फूले की पुस्तक 1992 गुलाम गीरी को पढ़े-महाराष्ट्र सरकार प्रकाशन)

हमें कड़ी को हमेशा के लिये तोड़ देना है। बन्धन और गुलामी का अन्त होना चाहिए। लेकिन पहले हमें यह पता लगाना चाहिए कि ये पुस्तकें क्या कहती है? लोकतंत्र की विचार धारा, सामाजिक न्याय, धर्म निर्पेक्षता, राजनीति, अर्थ शास्त्र, नेतृत्व तथा चुनाव-ये सभी जाति नामक शैतान पर आधारित हैं जिसने निर्दोषों और वंचितों को गले तक जकड़ रखा है।

हिन्दू और हिन्दुत्व शब्द कहाँ से आये?

हिन्दुओं का कोई भी धर्म ग्रन्थ इन शब्दों का हवाला नहीं देता। न पवित्रतम वेद न गीता। यहाँ तक रामायण और महाभारत भी नहीं। हिन्दुओं के पवित्र धर्म के नाम का हवाला कैसे नहीं। आश्चर्य है।

हम उन चिकने चेहरों से पर्दा हटा दें जो हर कोने में हमें घूरते हैं।

अरे हिन्दुओं सत्य को खोजो सत्य तुम्हें मुक्त करेगा।

यदि तुम सत्य को पाने में असफल रहे तो आप हमेशा के लिये गुलाम रहोगे।

क्या तुम स्वतंत्र होना चाहते हो? क्या तुम मानव होना चाहते हो?तब गम्भीरता से विचार करो और आज से कार्यवाही करो। कल नहीं। कल बहुत देर हो जायेगी।

अध्याय - 4

रामायण में अशलीलता

डा. चार्ल्स का दावा है कि रामायण में इतना अधिक कामोत्तेजक अशलील साहित्य है कि इसे आम जनता में पढ़ा नही जा सकता। वे निम्नलिखित उदाहरण देते हैं:

राम ने सीता की सुन्दरता का लम्पटता से विस्तृत वर्णन किया है (सी आर श्रीनिवास अयंगार का अरण्य कांड के अनुवाद को देखें- अध्याय 46) किश्किन्डा काण्ड में राम अपने भाई लक्ष्मण से सीता के साथ किये गये सम्भोग के अनुभव का वर्णन करते हैं।

गोभक्षक ब्राह्मण

रामायण के अनुसार आर्य (ब्राह्मण) शराब (नौ प्रकार की) पीते थे, गाय का मांस खाते, बहुत सी औरतों से शादी करने और पुजारियों और देवताओं में वैश्या वृत्ति की एक जीवन शैली के रुप में स्वीकृति थी।

सुरा का अर्थ अलकोहल मय पेय, सभी आर्य देवता जो शराब पीते थे वे सुर तथा जो नही पीते थे वे असुर कहे जाते थे। रावण असुर थे। तमिलनाडू के महान् हिन्दू नेता पेरियर रामास्वामी नायकर रावण के भक्त थे क्यों कि रावण द्रविड़ थे।

रामायण में दशरथ की कथा का वर्णन है जिसमें वे एक पुत्र की प्राप्ति हेतु भेड़ों, पालतू जानवरों, घोड़ों चिड़ियों व सापों की बलि चढ़ाने का एक विशाल यज्ञ करते है। तब वे अपनी तीन रानी कौशिल्या, सुमित्रा व कैकेई को तीन ऋषियों को सौंप देते हैं। ये पवित्र व्यक्ति अपनी वासनामय कामना से भरपूर सन्तुष्ट होकर इन रानियों को राजा को लौटा देते हैं। इस विधि से राजा दशरथ राम लक्ष्मण भरत शत्रुघ्न नामक तीन पुत्र पैदा करने में सफल हो जाते है (बालकाण्ड- अध्याय 14) यज्ञों पर विस्तृत वर्णन हेतु कुदी अरासू प्रेस द्वारा प्रकाशित गण सूरियन नामक पुस्तक पढ़ें।

क्या इसका अर्थ यह है कि राम ब्राह्मणों द्वारा पैदा हुये?

रामायण में सगे सम्बंधियों के साथ अवैध मैथुन सम्बन्धों के बारे में बहुत

अधिक सामग्री मिलती है। लेकिन हम इस वर्णन को लिखना न तो उचित समझते हैं और न शिष्टता पूर्ण (कृ. अरण्य काण्ड अध्याय 45 के श्लोक, 122 से 125 तक पढ़े)

आर्यो के निम्नलिखित रीति रिवाजों से पता चलेगा कि हिन्दुत्व के नाम पर कितनी अशिष्टता और अनैतिकता को मान्यता दी गई है:

लिंग और योनि

संस्कृत में लिंग और योनि का अर्थ मर्द और औरत के जननांगों से है। हिन्दुओं को योनि और लिंग समेत किसी भी चीज को पूजने की छूट है। अपने बच्चों को शिव लिंगम व राम लिंगम नाम रखना किसी से छिपा नहीं है (कर्नाटक में कुछ स्थानों पर भगवान, मर्द और औरत को नंगे होकर एक साथ प्रार्थना करने की मांग करते हैं)

देवदासी (धार्मिक वैश्या वृत्ति)

टाइम्स आफ इण्डिया (10-11-87) के अनुसार देवदासी प्रथा सामन्तों व ब्राह्मण पुजारियों की आपसी साजिश का परिणाम है। बाद में किसानों व शिल्पकारों पर वैचारिक व धार्मिक पकड़ के बाद उन्होंने ऐसे रास्ते निकाले जिन्होंने ने इस वैश्या वृत्ति को धार्मिक स्वीकृति प्रदान कर दी। गरीब नीची जाति के हिन्दुओं की लड़कियाँ प्रारम्भ में प्राइवेट नीलामी में बेंच दी जाती थी तथा बाद में उनको मन्दिरों में अर्पित कर दिया जाता था। इसके बाद उनको वैश्या वृत्ति में लगा दिया जाता था। यहाँ तक आज भी इस धार्मिक वैश्या वृत्ति को हिन्दू धर्म का आशीर्वाद प्राप्त है तथा यह प्रथा आज भी कर्नाटक व महाराष्ट्र में जिन्दा है।

भरत नाट्यम और ब्राह्मण

भरत नाट्यम एक नृत्य (नाटक) है जिसे ब्राह्मण मीडिया द्वारा कला रूप में भरपूर मान्यता मिली। प्रसिद्ध भरत नाट्य विशेषज्ञ रुक्मिनी देवी ने एक नेशनल ज्योग्राफिक वीडियों प्रोग्राम में स्वीकार किया है कि वास्तव में भरत नाट्य देवदासियों (मन्दिर की वैश्यायें) द्वारा अपने ग्राहकों को खुश करने की कला थी। यही कारण है कि हिन्दू मन्दिरों में भरत नाट्य की नाना प्रकार की मुद्रायें मिलती है।

जापानियों की करीर की कला के समान भरत नाट्यम ब्राह्मणों की राष्ट्रीय कला और उनकी संस्कृति का अभिन्न अंग बन गया है।

कामसूत्र

ब्राह्मणों ने काम सूत्र लिखा जिसमें सम्भोग करने की विधियों का वर्णन है। काम सूत्र में वर्णित कुछ आसन तो इतने जटिल हैं कि वे एक या एक से अधिक सहायकों की मदद के बिना सम्पन्न नहीं कराये जा सकते!

कुछ हिन्दू मन्दिरों में काम सूत्र के मैथुन सम्बन्धी पोज पत्थरों में खुदे हुये हैं जिनकी हिन्दू पूजा करते हैं।

देवदासी प्रथा प्रचलन में है

टाइम्स आफ इण्डिया यू. एन.आई. 10 नवम्बर 1987 पुष्टि करता है कि कर्नाटक आन्ध्र प्रदेश और दक्षिण भारत के अन्य हिस्सों में छोटी (दलित) लड़कियों (महार, मंग, चम्हार, डोरी) को देवी को समर्पित किया जाता है तथा जवान होने पर वैश्या वृत्ति के पेशें में लगा दिया जाता है। स्वास्थ्य विभाग के दो डाक्टरों के अध्ययन के अनुसार यह प्रथा सामाजिक पिछड़ा पन गरीबी व अशिक्षा के कारण हैं।

रिपोर्ट में स्पष्ट रूप से इंगित किया गया है कि देवदासी प्रथा सामन्त शाही वर्ग और पुजारी (ब्राह्मण) के बीच की साजिश का फल है जिन्होंने किसानों व दस्तकार कौमों पर अपनी वैचारिक व धार्मिक पकड़ से ऐसी प्रथा निकाली जिसको धार्मिक स्वीकृति की आवश्यकता थी। उन्होंने अपने देवदासी नामक अध्ययन के शीर्षक में "धार्मिक संस्कृति और बाल वैश्यावृत्ति के बीच में कड़ी" नाम से टिप्पणी की है।

अध्ययन के अनुसार गरीब हिन्दू परिवारों की लड़कियाँ यौनावस्था प्रारम्भ होने के बाद प्राईवेट नीलामी द्वारा अपने मालिक को बेंच दी जाती थी जो प्रारम्भ में 500 से लेकर 5000 रू. प्रति परिवार भुकतान करते हैं।

देवदासी बाहुल्य क्षेत्रों में विश्व स्वास्थ्य संगठन द्वारा किये गये अध्ययन से पता चलता है कि देश में अर्पित लड़कियाँ कुल वैश्या वृत्ति में लगी औरतों का 15 प्रतिशत हिस्सा है और 70 प्रतिशत से अस्सी प्रतिशत वैश्यायें महाराष्ट्र और कर्नाटक के सीमा वर्ती इलाकों में पायी जाती हैं।

काशी (बनारस) के बहुत से योगी व ऋषि नंगे रहते हैं और अपनी जीविका के लिये भीख मांगते हैं ये गन्दे व अशवच्छ वातावरण मे रहते हैं तथा नशाखोरी के आदी हैं।

हमारे तथा कथित नेता व बुद्धि जीवियों ने अंध विश्वासी धारणाओं को बहुत बढ़ावा दिया है और उन्होंने जनता को ठगने के लिये धोखा धड़ी करने हेतु इन सन्तों की खूब मदद की है तथा पाला है। सबसे ज्यादा शर्मनाक तो यह है कि इन नंगे भगवानों की पूजा करने में बहुत से हाई कोर्ट के जज वकील इन्जीनियर डाक्टर, अध्यापक, राजनीतिज्ञ, सिनेमा के अभिनेता व अभिनेत्रियाँ भी हैं, यहाँ तक प्रधान मंत्री राष्ट्रपति भी हैं।

इन हिन्दू सन्त योगियों के बारे में अधिक जानकारी के लिये "शाकिंग एशिया" नामक वीडियों डाक्युमेन्टरी देखें जो निम्न लिखित पते पर उपलब्ध हैं–

Atlas International Film GMBH, Munich, W.Germany or Reply Video, London, G. Britain or Distribution First Film organisation, Hong Kong.

डा. एच. नरसिम्हैया एक समर्पित हिन्दू व पूर्व कुलपति बंगलौर विश्व विद्यालय को सतसाई बाबा की सम्मोहन विद्या को ईश्वरी शक्ति प्रचारित करने का विरोध करने के कारण बरखास्त कर दिया गया था। उनसे नेशनल कालेज, बसावन गुडी, बंगलौर-4 (भारत) पर सम्पर्क किया जा सकता है।

सम्पूर्ण नग्न स्नान

दिनांक 23-9-87 की समाचार एजेन्सी रिपोर्ट कहती है कि कुरूक्षेत्र (भारत) के लगभग एक हजार नंगे हिन्दू साधु (सन्त) सूर्य ग्रहण के दौरान नदी में इस दावा के साथ कूद पड़े कि इसी घड़ी में पाप धुलेगें। दस लाख से अधिक स्त्री या पुरुष नंगे अधनंगे यात्रियों ने नदी में कूद कर उनका अनुशरण किया। सबसे बड़ा जलाशय ब्रह्म सरोवर है तथा कहा जाता है कि एक लाख स्नानार्थियों को एक साथ स्थान दे सकता है। इस पर भी वहाँ पानी में सभी को एक साथ नहाने में जगह नहीं मिली और उसमें बहुत अधिक धक्का मुक्की व दबाव हुआ। किनारे पर प्रतीक्षारत भीड़ को खड़े होने को जगह नहीं मिली। यही दशा भारत के पवित्र स्नान पर्वों की है। हरियाणा सरकार के एक प्रवक्ता ने बताया कि विकृत मनोवृत्ति वालों को इस अवसर पर फायदा उठाने से रोकने के लिये उन्होंने दो हजार पुलिस मैन लगाये थे।

इसके अतिरिक्त चश्मा के बिना लोग सूर्य की ओर नंगी आँखों से देखते हैं। डाक्टरों व वैज्ञानिकों की राय के अनुसार इससे अन्धा होने का खतरा रहता है।

डी. पी. ए. समाचार (6-11-86) की सूचना के अनुसार पूना में एक "चमत्कारी पुरुष" को महिलाओं की बहुत सी समस्याओं के समाधान करने का बहाना बनाकर उनसे सम्भोग करने के जुर्म में गिरफ्तार किया। वह एकान्त में उन औरतों को मूर्ति के सामने नंगे होकर बैठने को कहता था और वह मूर्ति स्वयं शंका का समाधान करती थी। वह कागज की एक कोरी चिट को मूर्ति के सामने की आग के सामने करता था जिससे उसमें लिखे हुये अक्षर उभर आते थे। तभी वह उन औरतों को प्रभावित करके शारीरिक सम्बन्ध कायम करने हेतु राजी कर लेता था। पुलिस ने पता चलाया कि यह उसकी दैविक राय नहीं थी बल्कि वह एक रसायन की करामात थी जिससे लिखे हुए अदर्शनीय अक्षर कागज से आग के सामने लाने पर उभर आते थे।

ऋषि किस प्रकार पैदा हुये?

हिन्दुओं के पवित्र धर्म ग्रन्थों के अनुसार ब्रह्मँ ने शिव जी की शादी पुरोहित की हैसियत से देवी पार्वती से सम्पन्न कराई थी। जब शिव पार्वती अग्नि के फेरे लगा रहे थे तो ब्रह्मँ जी को किसी प्रकार पार्वती जी की जांघ का ऊपरी हिस्सा दिख गया। इससे उनका वीर्य स्खलित होकर हवनकुण्ड में जा गिरा तथा इसी से हवन कुण्ड में से ऋषि पैदा हुये। हिन्दू पुराण के अनुसार ये भगवान इस प्रकार का घृणित व्यवहार कर सकते है।

गाय के साथ सम्भोग

बहुत से हिन्दू मंदिरों में ऐसी कलाकृतियाँ हैं जो औरतों से ही सम्भोगरत नहीं है बल्कि गायों से भी है। इसका क्या अर्थ हुआ? क्या गाय पवित्र माता नहीं है? यदि है तो उसका बलात्कार करने के बजाय उसकी पूजा होनी चाहिए।

हिन्दू गाय से पैदा हुए

ब्राह्मण हिन्दुओं को बताते हैं कि गाय उनकी माता है। इसीलिये हिन्दुओं को गाय का मांस खाना मना है। लेकिन केरल में यहाँ तक हिन्दू होटलों में भुना हुआ गाय का मांस बिकता है और हिन्दू इसे जानकर भी खाते है कि वह उनकी माता का मांस है। क्या केरल के हिन्दू गाय द्वारा पैदा नहीं हुये?

रामायण आर्यों की संस्कृति है

डॉ. चार्ल्स का दावा है कि रामायण और कुछ नहीं बल्कि आर्यों (ब्राह्मणों) की संस्कृति व जीवन पद्धति है जो वर्तमान भारत में आज भी गहरा प्रभाव रखती है। रामायण के अनुसार आर्य (ब्राह्मण) शराब पीते थे, गाय का मांस खाते थे, बहुत सी औरते रखते थे और वैश्यावृति ऋषियों मुनियों व पुजारियों की जीवन पद्धति बन गई थी।

अध्याय - 5

पवित्र धर्म ग्रन्थ वेद और हिन्दुत्व, रामायण की कहानियाँ

यदि आप रामायण को पढ़ें तो आप निष्कर्ष पर पहुँचेंगे कि यह ईश्वर प्रदत्त नहीं है बल्कि आप इसमें अश्लीलता, झूठ, धोखा व परिवारिक व्यभिचार पायेंगे।

आम हिन्दू अंधेरे में रक्खा जाता है और वास्तव में वह हिन्दू विश्वासों से संबंधित मामलों में अनभिज्ञ रहता है। हम दावा करते हैं कि यदि वह वास्तव में रामायण को पढ़ता है तो वह अपने धर्म और अपने को हिन्दू कहने में शर्म अनुभव करेगा।

गीता जो वास्तव में थी

"गीता जो वास्तव में थी" दिल को आघात पहुंचाने वाली पुस्तक है जो ब्राह्मणों द्वारा वास्तविक गीता में घालमेल व जालसाजी का पर्दाफाश करती है। बिहार के संस्कृत के विद्वान श्री फुलगेन्दा सिन्हा जो अब यू.एस.ए. में बस गये हैं, ने मूल गीता खोज निकाली है जिसके बारे में वे कहते हैं कि ब्राह्मणों ने गीता के मूल उपदेश को धूमिल करने के लिए उसमें क्षेपक जोड़े। अपने दावे को सिद्ध करने के लिये लेखक ने उसके मूल पाठ को संस्कृत व अंग्रेजी दोनों में प्रकाशित किया है। यह पुस्तक Open Court, La Sale, Illinois 61301 USA, मूल्य 15.95 यू.एस.डालर पर उपलब्ध है।

अवैज्ञानिक दावे

ब्राह्मणों का हमेशा यह रवैया रहा है कि वे हर चीज का विज्ञान के नाम पर दावा करते हैं। लेकिन वैज्ञानिकों डाक्टरों व विशेषज्ञों का दूसरा दावा है। पहले तो मामूली बुद्धि वाला आदमी भी ब्राह्मणों के इन दावों से सहमत नहीं होगा। यहाँ ब्राह्मणों द्वारा पैदा किये गये कुछ अवैज्ञानिक दावों के कुछ उदाहरण पेश किये जा रहे है:

पृथ्वी चपटी है

नरसिंह पुराण पेज 169 में अभितान चिन्तामणि कहते हैं कि पृथ्वी चपटी है आज यह वैज्ञानिकों द्वारा निर्विवाद रूप से सिद्ध हो चुका है कि पृथ्वी गोल है।

पृथ्वी सूर्य व चन्द्रमा के बीच की दूरी

विश्नु पुराण कहती है कि सूर्य, चन्द्रमा पृथ्वी से क्रमशः 8,00000 व 2200000 मील दूर है परन्तु ताराविज्ञानियों ने अब सिद्ध किया है कि चन्द्रमा पृथ्वी के ज्यादा नजदीक है, अर्थात् 2,40,000 मील और सूर्य पृथ्वी से 9,30,00,000 मील दूर है।

पृथ्वी का क्षेत्रफल

मारकन्डे पुराण के अनुसार पृथ्वी का क्षेत्रफल 4000000000 वर्ग मील है जब कि ताराविज्ञानियों ने यह क्षेत्रफल सिर्फ 190700000 वर्ग मील बताया है।

गाय के गोबर की भभूत

वेद कहते है कि पवित्र होने के कारण गाय की पूजा की जानी चाहिए। ये ब्राह्मण यह भी दावा करते हैं कि गाय के गोबर की राख में औषधीय गुण होते हैं। पश्चिमी जर्मनी की नामी प्रयोगशाला में भेजे राख के नमूनों की जांच ने इस दावे को झूठा सिद्ध किया है।

भारत में लोग भूख से मर रहे हैं। नीची जाति के हिन्दुओं को बीफ खाने से क्यों रोका जा रहा है। भारत में अन्य उपलबध मांसों में गाय का मांस सस्ता है। भारत के नीची जाति के लोगों की चिन्ता किये बगैर पवित्र गायों की रक्षा करने का ज्यादा प्रयास कर रहे हैं। वाल्मीकि रामायण के अनुसार राम ने गाय का मांस खाया। तब इन ब्राह्मणों ने बीफ खाना क्यों बन्द किया।

मूत्रपान

भूतपूर्व प्रधान मंत्री मोरारजी देसाई (ब्राह्मण) डींग हांकते थे कि वेदों में लिखित पेशाब के औषधीय गुणों के अनुसार वे 8 औस शुद्ध व ताजा पेशाब रोजाना सबेरे पीते हैं। उसी दावे के अनुसार आज आर.एस.एस./ब्राह्मण गाय का पेशाब टानिक समझकर पीते हैं।

आज तक किसी भी वैज्ञानिक ने दावा नहीं किया है कि पेशाब में कई औषधीय गुण होते हैं बल्कि यह सर्वमान्य सत्य है कि पेशाब अवांछनीय कार्बनिक पदार्थ हैं जिसे मानव देह को बाहर निकालना अनिवार्य है। (जो बैल अपना मूत्र पीता है वह सूखकर कांटा हो जाता है- अनुवादक)

सूर्य नमस्कार

वेदों और पुराणों का कहना है कि सभी हिन्दुओं को नंगी आंखों से प्रतिदिन प्रातः सूर्य भगवान का नमस्कार करना चाहिए। इससे आपकी आंखों की रोशनी बढ़ेगी। इसीलिये बहुत से हिन्दू सूर्य नमस्कार करते हैं, लेकिन उनकी रोशनी बढ़ने के बजाय भारत एक ऐसा देश है जिसमें पूरी दुनियाँ के सर्वाधिक अंधे लोग रहते हैं। 25 लाख अंधे तथा 90 लाख पुतली के अंधे।

सूर्य नमस्कार में कोई भी वैज्ञानिक सत्य नहीं है। बल्कि उल्टे, वैज्ञानिक व डाक्टर प्रत्येक व्यक्ति को सीधे ही नंगी आंखों से सूर्य की ओर न देखने की राय देते हैं। हमें सत्य बात कौन बता रहा है वैज्ञानिक या हिन्दू धर्म शास्त्र। आप स्वयं निर्णय करें। भारत के अधोपतन का श्रेय भी हिंदुत्व को जाता है।

गंगा नदी

हिन्दू धर्म ग्रन्थों के आदेशानुसार अधजले मुर्दे और उनकी राख को उनकी मुक्ति हेतु गंगा नदी में फेंकते हैं। दूसरे शब्दों में पवित्र गंगाजल मधुर पेय पदार्थ है। इसी से गंगा का पानी दूषित होकर नाना प्रकार की बीमारियों का प्रजनन केन्द्र बन गया है।

इस पर भी ये ब्राह्मण दावा करते हैं कि पवित्र गंगा को कोई दूषित नहीं कर सकता। तब भारत सरकार गंगा के दूषित पानी को शुद्ध करने के लिये दसियों लाख रुपया क्यों खर्च करती है? और क्या आप जानते हैं कि इस मैली गंगा को कौन शुद्ध कर रहा है? वह फ्रांस सरकार है।

पर्यावरण को खतरा

ए.पी. न्यूज इण्डिया दिनांक 10.11.86 के अनुसार :

जब भारत में एक हिन्दू का दाह कर्म होता है तो चिता सजाने के लिये एक या एक से अधिक औसत दर्जे का पेड़ अवश्य कट जाता है। पर्यावरण विशेषज्ञों की चेतावनी है कि जंगलों को काटने से वातावरण को भारी खतरा पैदा हो गया है और जब हम कम से कम 32 प्रतिशत जंगलों को पहले ही खो चुके हैं। भारत में रोजाना हिन्दू मर रहे हैं तथा अपने साथ पेड़ों को भी ले जाते है। कम से कम 64.3 लाख किलो लकड़ी रोजाना आग के हवाले हो रही है। सालाना नुकसान 23.5 लाख टन है। जब आदमी लकड़ी से जलाया जाता है तो वातावरण में कितना प्रदूषण फैलता है। (यही नहीं उस बदबू की कल्पना करें जो वातावरण में फैलती है।)

अध्याय - 6

हिन्दू धर्म में औरतों का स्थान :

स्त्रियों के प्रति अन्याय व उनके अधोपतन की हिन्दू धर्म में स्वीकृति है। मनुस्मृति कहती है

1. औरतों पर कभी विश्वास मत करो
2. औरत के साथ कभी भी मत बैठो चाहे वह आप की माँ हो, तो वह आपको सम्मोहित कर सकती है।
3. अपनी पुत्री के साथ अकेले मत बैठो, वह आपको सम्मोहित कर सकती है।
4. अपनी बहन के साथ अकेले मत बैठो वह आपको सम्मोहित कर सकती है।
5. फिर मनुस्मृति कहती है :

समाज में स्त्री को स्वाधीनता न दी जाय।

हिन्दू महिलायें बनाम मुस्लिम महिलायें :

ब्राह्मण प्रचार माध्यमों ने शाह बानो केस के खिलाफ जोरदार अभियान चलाया और उसे पूरी ताकत से उभारने की कोशिश की। प्रचारित किया गया कि इस्लाम महिलाओं की स्वतंत्रता को सीमित करता है। हम हिन्दू और मुस्लिम महिलाओं की दशा की तुलना करें। तुलना के लिये निम्नलिखित तथ्यों पर विचार करके इन ब्राह्मणों को होश में लायें।

हिन्दू महिलायें

1. हिन्दू औरत को अपने पति को तलाक देने का कोई अधिकार नहीं।
2. उसको सम्पत्ति व पैत्रिक अधिकार नहीं।
3. जीवन साथी के चयन की स्वतंत्रता सीमित है क्योंकि वह सिर्फ अपनी ही जाति के अन्दर शादी कर सकती है, इसके अतिरिक्त उसकी जन्मकुण्डली दूल्हे या उसके परिवार से मेल खानी चाहिए।
4. लड़की के परिवार को दूल्हा या उसके परिवार को एक मोटी रकम दहेज के रूप में देना पड़ती है।
5. यदि पति मर जाता है तो उसके साथ सती हो जाना चाहिए। चूंकि सती पर अब कानूनी रोक है। इसलिये हिन्दू समाज उसके अन्य पवित्र तरीकों से यातनायें देता है। (नीचे देखें)

6. वह पुनर्विवाह नहीं कर सकती ।

7. विधवां को पापिनी समझा जाता है, इसीलिये उसे आम जनता में दिखना वर्जित है। वह गहने व रंगीन कपड़े नहीं पहन सकती (यहां तक उसके अपने निजी पुत्र पुत्रियों की शादी में हिस्सा नहीं लेना चाहिए।)

8. बाल व शिशु विवाह को बढ़ावा दिया जाता है।

मुस्लिम महिलायें

1. मुस्लिम स्त्री को तलाक देने के बलावा वही सब अधिकार प्राप्त हैं जो मुस्लिम मर्द को।

2. उसको सम्पत्ति व पैतृक उत्तराधिकार प्राप्त हैं। वह अपना निजी उद्योग चला सकती है।

3. वह अपनी मर्जी के किसी भी मुसलमान से शादी कर सकती है। यदि उसके माता-पिता उसके पति का चयन करते हैं तो इसमें उसकी सहमति लेनी पड़ती है।

4. इस्लाम में दहेज पति द्वारा अपनी पत्नी को दिये गये उपहार हैं। आजकल कुछ मुसलमान इसका उल्टा करते हैं जो कानून सम्मत नहीं है।

5. मुस्लिम विधवा को पुनर्विवाह हेतु पोत्साहित किया जाता है और उसका पुनर्विवाह मुस्लिम समाज की जिम्मेंदारी है।

6. समाज में जातिगत संकीर्णता को बढ़ावा न देने के लिये मिलवां शादी को प्रोत्साहित किया जाता है।

दलित वायस के सम्पादक वी. टी. राजशेखर पूछते हैं कि हिन्दुओं को मुसलमानों की आलोचना करने का क्या अधिकार है? क्या आपने किसी मुसलमान को अपनी पत्नी को जलाते देखा है। रोजाना हम अखबारों में दहेज हत्याओं को देखते हैं कि हिन्दू औरत को उनके पति या सास ससुर ने जलाकर मार डाला। यह एक सत्य है कि ऊँची जाति के लोग ही अपनी महिलाओं पर ज्यादा अतयाचार करते हैं। ब्राह्मणों का प्रेस सभी के दिमागों में यहीं बात बैठा रहे है कि मुसलमान अपनी औरतों को स्वतंत्रता नहीं देते। वे फिर पूछते हैं कि "क्या हिन्दू अपनी महिलाओं का सम्मान करते हैं?" आप सही निर्णय करें।

टाइम्स आफ इण्डिया बम्बई (1993) ने चार हिन्दू महिला कार्यकर्ताओं द्वारा हस्ताक्षरित एक पत्र प्रकाशिक किया है जिसमें उन्हें औरतों के अधिकारों पर सम्पन्न एक सेमिनार की सिफारिशों का उल्लेख किया है। सेमिनार का कहना है कि हिन्दू महिलाओं के मुकाबलें मुस्लिम महिलायें हर मामले में कहीं ज्यादा बेहतर हैं।

सती जिसमें हिन्दू महिलायें जलाई जाती हैं

टाइम्स आफ इण्डिया (14-9-87) ने जयपुर से सूचना दी पुलिस ने बताया कि सदियों पुरानी सती प्रथा की पुनरावृति हुई। राजस्थान की एक बहादुर जाति राजपूत की ए यौवना युवती ने अपनी पति की चिता के साथ जलकर प्राण दे दिये। अठारह वर्षीय रुप कुंवर का पति मानसिंह शुक्रवार को कीकर जिले के एक अस्पताल में मर गया। बाद में दाह संस्कार के लिये उसका शव उसके गांव दिवराला लाया गया था। रूप कुंवर दाह चिता पर लेट गई तथा अग्नि दाह मानसिंह के एक सम्बन्धी ने किया। गांव के सैकड़ों लोग सती होने वाली विधवा की प्रशंसा में गीत गा रहे थे, को उसके सती होने के बारे में पहले से ही मालूम था। पुलिस जिसने दावा किया है कि उसको यह सूचना दे से मिली, ने मानसिंह के चार रिश्तेंदारों के खिलाफ रूपकुंवर को सती होने में मदद करने के अपराध में मुकदमा दायर किया।

रूप कुंवर के प्रति व ससुर ने नकद, 25 तोला सोना, एक टी.वी., रेडियों और एक फ्रिज के रूप में एक लाख रुपये से अधिक का दहेज लिया था। यद्यपि मानसिंह ने दो लाख रूपये का दहेज मांगा था, परन्तु रूप कुंवर के पिता ने हाथ पैर जोड़कर यह रकम एक लाख रूपये करवा ली थी। अब तक इस गांव में तीन साल के अन्दर वादा किये गये दहेज को न देने के कारण 23 से अधिक बहुओं की हत्या हुई है।

अखवार ने कहा कि शिक्षक चीतासिंह का बयान सर्वाधिक उल्लेखनीय है : "आखिरकार उसके जीवन में घोर अंधेरा है। विधवां विवाह का इन परम्पराओं में बंधे समाज में कोई सवाल नहीं उठता। हिन्दू समाज विधवाँ को कुलक्षणी व आर्थिक बोझ समझता है। उसे नंगे पैरों रहना पड़ेगा, जमीन पर सोना पड़ेगा और उसको घर के अन्दर कैद होकर रहना पड़ेगा। इस प्रकार का जीवन बिताने के बजाय अच्छा हुआ जो वह मर गई।"

अनिवार्य सती

रयूटर की खबर (25-9-87) ने बताया कि रूप कुंवर को जबरजस्ती चिता में उसकी इच्छा के विरूद्ध डाला गया तथा वह अपने जीवन को बचाने के लिये संघर्ष करती रही। कुछ गांव वालों ने आरोप लगाया कि रूप कुंवर को चिता में जबरजस्ती जलाया गया तथा उसने मरते समय दिल को दहलाने वाली चीख पुकार की। एक पुलिस रिपोर्ट ने अन्ततः स्थापित किया कि आग लगने से पहले रूप कुंवर ने चिता से भाग निकलने का प्रयास किया। लेकिन उसके गले तक भारी भरकम लकड़ी के टुकड़े लाध दिये जाने के कारण वह ऐसा नहीं कर सकी। उसकी चीत्कार गायत्री मंत्र और "सती माता की जय" के नारों में दबकर रह गई। यद्यपि पड़ोसियों का दावा था कि वह 18 वर्ष की थी। लेकिन टाइम्स आफ इण्डिया ने उसके स्कूल रिकार्ड का हवाला देकर उसकी जन्म तिथि 15 अगस्त 1971 बताई गई।

यही हिन्दू धर्म है? क्या हमें हिन्दुओं के इन क्रूर हिन्दू रीति रिवाजों से बचाना चाहिए? एक कलकत्ता वूमेन्स एसोसिएसन के सर्वेक्षण में बताया गया है कि बाल विधवां के विरोध को नजरन्दाज करते हुए अधिकतम सती के केस मृतक हिन्दू के निकट सम्बधियों द्वारा जबरन कराये जाते हैं। यद्यपि इस अमानवीय प्रथा एर कानूनन रोक है परन्तु भारत के इतिहास में कोई भी मृतक का पति व सम्बन्धी नहीं है जिसको इस अपराध के उकसाने में आज तक सजा हुई हो। क्यों? क्योंकि हिन्दूधर्म विधवाओं को जलाने की अनुमति देता है।

यदि रूप कुंवर किसी दुर्घटना में मरी होती तो उसका पति व उसका ससुर मानसिंह एक दूसरी सुन्दर लड़की से विवाहोत्सव मना रहे होते और उनको एक लाख रूपये का दहेज और मिल रहा होता।

रूप कुंवर के पिता की प्रतिक्रिया

यह जानते हुये भी कि रूप कुंवर के पिता इस क्रूर हत्या की स्वीकृति नहीं देगें तब भी मानसिंह के परिवार वालों ने उसके पिता को इसकी सूचना तक नहीं दी। उनको यह सूचना दूसरे दिन अखवारों के माध्यम से प्राप्त हुई हिन्दू धर्म के नाम पर रूप कुंवर के पिता की रूपवती इकलौती बेटी की जबरन क्रूरता पूर्ण हत्या करदी गई। आप हिन्दू महिलाओं पर अत्याचार को देखें। हिन्दू होने के कारण महिलायें एक अभिशाप हैं।

डा. लक्ष्मी की ब्राह्मण महिलाओं को राय

दिल्ली की मशहूर स्त्री रोग विशेषज्ञ और सामाजिक कार्यकर्ता जो स्वयं ब्राह्मण हैं (और उन्होंने 37 साल की उम्र में शादी की) की राय है कि ब्राह्मण औरतें अपने घोंसले से बाहर आयें और स्वयं संघर्ष करें क्योंकि उनका दावा है कि उनके जंग लगे विचार उनकी कतई रक्षा नहीं कर सकते।

डा. लक्ष्मी का फिर दावा है कि 25 साल के बाद शादी शुदा औरतें क्वांरी नहीं है (बहुत सी औरतें तब तक शादी नहीं करती जब तक वे 30 साल की नहीं हो जाती) इस लम्बे विलम्ब व सेकेन्ड हेन्ड दम्पत्तियों के लिए ब्राह्मण मर्द जिम्मेंदार हैं। उनकी चुनौती है कि सेक्स का यह परहेज मानव दैहिक रचना की प्रकृति के विरूद्ध है। उनका यह भी कहना है कि यह समाज की जिम्मेंदारी है कि अन्य धर्मो की तरह वे भी उचित समय पर शादी करें।

उनका कहना है कि यदि आप हिन्दू नारी हैं तो जिसको आप प्यार करती हैं उसको प्यार नहीं कर सकती और जिससे आप शादी करना चाहें उससे आप शादी नहीं कर सकी। आपकी भागय रेखा आपके जीवन साथी की भाग्य रेखा के समान होनी चाहिए। इसके अतिरिक्त आपको अहसनीय दहेज की मांग पूरी करनी होगी।

एक अन्य आश्चर्य यह है कि हिन्दू धर्म शास्त्रों के अनुसार यहाँ तक एक ब्राह्मण औरत ब्राह्मण नहीं मानी जाती। सिर्फ ब्राह्मण पुरुष को ही पवित्र जनेऊ पहनने का अधिकार है, ब्राह्मण औरत को नहीं। इसलिये वह एक हीन व्यक्तित्व है। यहाँ तक एक ब्राह्मण पुजारी की पत्नी मन्दिर के गर्भ गृह में प्रवेश नहीं कर सकती क्योंकि वह ब्राह्मण नहीं है। इसे हिन्दुत्व कहते है।

और दूसरा आश्चर्य यह है कि हिन्दू औरत अशुद्ध होती है। वह अछूत हो जाती है। मासिक धर्म के समय उसे बाहर सोना पड़ता है। हिन्दू धर्म के अधीन महिलायें अकथनीय पीड़ाओं को झेलती हैं।

अध्याय - 7

क्या हिन्दू धर्म, धर्म है?

इसमें कोई सन्देह नहीं कि रामायण और महाभारत बहुत बड़ी गपोड़ी कहानियाँ हैं। लेकिन ये भारत के अतीत से सम्बन्ध रखती हैं। हम इन कहानियों की वैज्ञानिक और तथ्यात्मक विश्वसनीयता को सिद्ध नहीं कर सकते और इसीलिये हम हिन्दुत्व को एक धर्म के रूप में स्वीकार नहीं कर सकते। धर्म का अर्थ मनुष्य का ईश्वर से सम्बन्ध है न कि मनुष्य का मनुष्य से सम्बन्ध। ईश्वर तक पहुंचने के लिये व्यक्ति को मानव मात्र से प्यार का बर्ताव न्याय और समान अधिकार देना चाहिए। सभी धर्म इन्हीं विचारों की शिक्षा देते हैं। दुर्भाग्य से हिन्दू धर्म जो ब्राह्मणों द्वारा पैदा किया गया है वह शिक्षा देता है कि भगवान तक पहुंचने के लिये तुम्हे अपने साथी मनुष्यों से प्यार नहीं करना चाहिए और न तो तुम्हें उन्हें न्याय देना चाहिए और न समान अधिकार।

दूसरी ओर हिन्दू धर्म इस बात की शिक्षा देता है कि "धर्म" के नाम पर मनुष्य किस प्रकार दूसरों को ठगे व गुलाम बनाये। इस तकनीकि से भारत की जनसंख्या के 5% (ब्राह्मणों) ने 95% भारत के लोगों को नियंत्रित कर रक्खा है।

वास्तव में हिनदुत्व का अर्थ ब्राह्मणवाद है। ब्राह्मणों के अलावा और कोई हिन्दू नहीं है।

क्या हिन्दूवाद का विज्ञान से साथ हो सकता है?

क्या किसी ऐतिहासिक दस्तावेज का सबूत है जो यह सिद्ध कर सके कि राम ने भारत पर कभी शासन किया था? क्या तथाकथित ब्राह्मणों में से कोई ऐसा विद्वान है जो इस सम्बन्ध में किसी पश्चिमी इतिहासकार का अपने समर्थन में तथ्य पेश कर सके। उदाहरण के तौर पर आज हनुमान का पुल कहां है? क्या चन्द्रमा हिमालय की चोटी पर स्थित है? क्या अनैतिकता की पहचान धर्म से होनी चाहिए?

वेद और पुराण कहते हैं कि असली ब्राह्मण को समुद्र पार नहीं करना चाहिए और यही वह कारण है कि जिससे राम ने लंका तक पुल बनाने के लिये हनुमान से कहा था। लेकिन आज ब्राह्मण न केवल समुद्र पार करते हैं बल्कि

हवाई जहाजों में पायलट का काम करते हैं।

आचार्य लोगों (ब्राह्मण पुजारियों) ने अब यह प्रस्ताव पास किया है कि अण्डा एक शाकाहारी भोजन है और इसीलिये इसे हिन्दू खा सकते हैं। बंगाली ब्राह्मण मछली को पहले से ही जल तुरइयां या पानी के फूल समझ कर खा रहे हैं।

ब्राह्मणों की औरतें न केवल दुबारा विवाह करती हैं बल्कि दूसरी जाति के मर्दों से भी शादी कर रही हैं। बहुत बहुत धन्यवाद डॉ. अम्बेदकर, पेरियर रामास्वामी, लार्ड पेन्डिग और डॉ. रामदास को कि अब नीची जाति के हिन्दू प्रशासक, वैज्ञानिक और यहां तक पुजारी तक बनने लगे हैं।

हैदराबाद के महान हिन्दू पत्रकार बी.आर. निराला की पुस्तकें पढ़ें।

हिन्दुत्व के बारे में अधिक जानकारी के लिये कृपया वेद और पुराणों का निष्पक्ष भाव से अध्ययन करें तो आप जो हिन्दुत्व के बारे में विचार रखते हैं, उनमें बहुत बड़ा परिवर्तन पायेंगे।

स्वामी विवेकानन्द की पुस्तक "आन कास्ट, कल्चर एण्ड सोशलिज्म" जिसमें उन्होंने चेतावनी दी है कि हिन्दू धर्म ब्राह्मणों के कारण ही मर रहा हैं। विवेकानन्द हिन्दुओं के महान सन्त हैं। जब वे शिकागों के "विश्व धर्म कांग्रेस" में आमंत्रित किये गये तो ब्राह्मणों ने उन्हें शूद्र कहकर उनकी यात्रा का खर्च देने से इनकार कर दिया। तब गैर ब्राह्मण मैसूर और तंजौर के महाराजाओं ने यह खर्च दिया था।

भारत के मुक्ति दाताओं को एक श्रद्धांजलि

1. पेरियर ई.वी. रामास्वामी
2. डॉ. बी.आर. अम्बेडकर
3. सी.एन. अन्नादुरई
4. श्याम सुन्दर
5. राजाराम मोहन राय
6. लार्ड पेन्डिग
7. स्वामी विवेकानन्द
8. एम.एन. रॉय

9. डॉ. लोहिया

10. श्री नारायन गुरु

11. महात्मा फूले

12. डी.डी. कौशाम्बी

निष्कर्ष

हम बिना किसी सन्देह के निष्कर्ष निकाल सकते हैं कि धर्म के तौर पर हिन्दुत्व (ब्राह्मणवाद) मानव स्वभाव को सन्तुष्ट नहीं नहीं करता। यह असमानता दूसरों के प्रति नफरत और कमजोर के शोषण पर आधारित है। मूत्रपान और सूर्य नमस्कार जैसे खोखले दावे इसे निर्जीव बना देते हैं।

एम. एन. राय, पेरियर ई. वी. रामास्वामी-दोनों महान हिन्दुओं ने कहा है कि सिर्फ इस्लाम ही ब्राह्मणवाद का मुकाबला कर सकता है। एम. एन. राय की पुस्तक "हिस्टोरीकल रोल आफ इस्लाम" और पेरियर की "सेलवेशन टु शूद्राज स्लेवरी" को पढ़ें।

आपको क्या करना चाहिए?

चाहे आप हिन्दू, मुस्लिम, सिक्ख, ईसाइ जैन, बौद्ध और यहाँ तक अधार्मिक भी हों, भारत भूमि के सर्वोत्तम हित में निम्न लिखित पथ प्रदर्शक निर्देशों को पढ़े और उनके अनुरूप कार्य वाही करें :

1. आप स्वयं जांच करें कि क्या इस पुस्तक की विषय सामग्री सत्य है।
2. सन्दर्भ में उल्लिखित पुस्तकें वीडियों कैसिट्स को पढ़े देखें और अपने मित्रों को बांटे।
3. इस पुस्तक को छपवायें। फोटो कापी करें। अनुवाद करें और जितना सम्भव हो सके बड़े पैमाने पर इसे वितरित करें।
4. अपनी राय को अखवारों व पत्रिकाओं में लिखें।
5. मौजूदा उन हिन्दू लीडरों से सम्पर्क रखें जो ब्राह्मणवाद के खिलाफ संघर्ष कर रहे हैं और स्वतंत्रता हेतु उनकी मदद करें।

• हिन्दुत्व को बचाने के लिये ब्राह्मणवाद को नष्ट करना अति आवश्यक है।

यदि आप हिन्दू हैं और हिन्दुत्व को बचाना चाहते हैं तो आर्यों और ब्राह्मणवाद से सावधान रहें। एक बार फिर आपको महान अंग्रेज दार्शनिक एडमण्ड बर्क के वचनों की याद दिलाना चाहते हैं:

"मूकदर्शक खतरनाक होते हैं"

हिन्दुत्व को मरने से पहले आप सचेत हों

लेखक की अन्तिम अपील

अब जब आप ने मेरी पुस्तक पढ़ ली है तो आप भारत के प्यारे धर्म के बारे में क्या सोचते हैं? क्या यह एक वरदान है या अभिशाप। ब्राह्मण हमारे मालिक अवश्य ही इसे वरदान कहेंगे, लेकिन गैर ब्राह्मणों के लिये यह प्रारम्भ से ही एक अभिशाप रहा है।

मैं एक भारतीय हिन्दू (ब्राह्मण) लेखक जो अपने वतन और हिन्दुत्व को प्यार करता हूँ, उस धर्म की वास्तविकता को बताना चाहता हूँ जो लोगों को बांटो और राज करो द्वारा पैदा किया था। वास्तव में अंग्रेजों के आने से बहुत पहले यह आर्य (ब्राह्मण) घुस पैठिये थे जिन्होंने बांटो राज करो की तरकीब निकाली। समस्या यह है कि यह नीति धर्म के रूप में भारतीयों के मस्तिष्क को विषाक्त बना रही है।

प्यारे पाठको मैं आपसे भारत के लोगों में एकता और समानता कायम करने की अपील करता हूँ याद रक्खें कि :

"संगठित होकर हम खड़े होंगे, विभाजित होकर गिरेंगे"

यदि भारत, मेरी प्यारी मातृभूमि को दूसरे विभाजन से बचाना है तो हमें उसे फासीवादियों जो अपने को हिन्दू लीडर कहते हैं, से बचाना है।

- ❑ यदि आप सोते रहे तो भारत के टुकड़े-टुकड़े हो जायेंगे।
- ❑ कल सिक्ख थे, आज मुसलमान है, कल ईसाई होंगे। इसके बाद दलित, पिछड़े वर्ग के लोग पहले से ही गुलाम हैं।
- ❑ ब्राह्मण अपने क्रूर वर्णाश्रम धर्म, जिसका दूसरा नाम जातिवाद है हम पर थोपेंगे और भारत को बरबाद कर देंगे।

REFERENCES

1. THE UNTOCHABLES OF INDIA : MINORITY RIGHT GROUP, 30 CRAVEN ST. LONDON WC2 5NG
2. MR. GANDHI AND THE EMANCIPATION OF UNTOUCHABLES : BHIM PATRIKA PUBLICATION, JULLUNDER PB. INDIA.
3. BRAHMIN FABRICATION AND FORGERY OF THE GITA? AND WHY: OPEN COURT, LA SALLE, ILLIONOIS - 61301, USA
4. GITA RAHASYA? OR MANUSMRITI (A CODE OF INHUMANITY) BY B.G. TILAK : TILAK BROTHERS, 568-NARAYAN PETH, PUNE-411030 (INDIA).
5. THE SACRED BOOKS OF THE EAST, EDITED BY F. MAXMULLER : THE VEDANTA - SUTRAS WITH THE COMMENTARY BY SHANKARACHARYA, TRANSLATED BY GEORG THIBAUT, PAGE 228-9; PUBLISHED BY MOTILAL BANARSIDAS, DELHI, 1968.
6. HISTORY OF HINDU IMPERALISM BY SWAMI DHARMA TIRTH (1992) P.O. BOX. 2296 MADRAS - 600023 (RS. 100).
7. UNTOUCHABILITY, WILL IT EVER VANISH? BHIM PATRIKA PUBLICATIONS.
8. RAMAYANA - VALMIKI.
9. ARYAN MYTH, LEON POLIAKOV, NEW AMERICAN LIBRARY, 1301, AVENUE OF AMERICAS, NEW YORK, NY-10019, USA
10. THE BIBLE, THE QURAN AND SCIENCE, MAURICE BUCAILLE - THE FRENCH SCHOLAR BOOK CENTRE, 1353 CHILI QABAR DELHI-110 006.
11. ANSWER TO RACIAL PROBLEMS - BY A GERMAN DIPLOMATE : IPC, P.O. BOX 2439, DURBAN, SOUTH AFRICA.
12. MAHABHARATA.
13. RAMAYANA - A TRUE READING BY PERIYAR EVR.
14. POLITICS OF GODS - CHURNING OF THE OCEAN - BY SL. DHANI, IAS D.D. BOOKS 754 SECTOR - 8, PANCHKULA 134108.
15. BUNCH OF THOUGHTS - M.S. GOLWALKAR, JAGARANA PRAKASHANA, KEMPE GOWDANAGAR, BANGALOR - 560019.
16. R.S.S. A DANGER - BY VIDUTHALAI RAJENDRAN, PERIYAR THIDAL, MADRAS - 560019.
17. DALIT - THE BLACK UNTOUCHABLES OF INDIA - BY V.T. RAJSHEKAR, CLARITY PRESS, ATLANTA, USA.
18. THE UNTOUCHABLES IN CONTEMPORARY INDIA : UNIVERSITY OF ARIZONA PRESS, TUCSON, ARIZONA, USA.

19. THE UNCHRISTIAN SIDE OF THE INDIAN CHURCH (DSA-1985) : BY REV. AZARIAH, BISHOP OF MADRAS.
20. WHY GODSE KILLED GANDHI - V.T. RAJSHEKAR (DSA).
21. ELEVEN VOLUMES OF BABA SAHIB B.R. AMBEDKAR - WRITTINGS AND SPEECHES PUBLISHED BY THE MAHARASTRA GOVT. BOMBAY.
22. VIOLENCE IN HINDUISM - PROF. K.S. BHAGHWAN, MYSORE UNIVERSITY, DSA BANGLORE - 3
23. WHO IS THE MOTHER OF HITLER? V.T. RAJSHEKAR (DSA).
24. WHY COMMUNAL G.O.? BY PERIYAR E.V. RAMASWAMI.
25. SALVATION TO SHURDA SLAVERY - BY PERIYAR EVR, DSA.
26. CHRISTIANITY, A POLITICAL PROBLEM - BY MAJOR VEDANTUM, II MAIN ROAD, EAST CITY NAGAR, MADRAS - 600 035.
27. GOD AND MAN - BY PERIYAR EV RAMASWAMI.
28. WHY GO FOR CONVERSION - BY DR BABA SAHAB AMBEDKAR, DSA.
29. WHY BRAHMIN HATES RESERVATION? BY PERIYAR E.V. RAMASWAMI, PERIYAR THIDAL, MADRAS - 3
30. QUINTESSENCE OF HINDU PHILOSOPHY - BY PERIYAR EV RAMASWAMI.
31. RISHIS LACKS OF REAL KNOWLEDGE, LIGHT HOUSE PUBLICATION, MADRAS - 3.
32. DECLARATION OF WAR ON BRAHMINISM - BY PERIYAR EV RAMASWAMI, PERIYAR THIDAL, MADRAS - 3.
33. IS NOT THE BRAHMIN A FOREIGNER? BY PERIYAR E.V. RAMASWAMI, PERIYAR THIDAL, MADRAS - 3
34. HISTORY OF TAMILS, P.T. SRINIVASA IYENGAR.
35. DR. B.R. AMBEDKAR ON CONGRESS AND BRAHIMINS - BY K. VEERAMANI, PERIYAR THIDAL MADRAS - 3.
36. HINDU FESTIVALS - BY PERIYAR EV RAMASWAMI - MADRAS.
37. SCIENTIFIC METHODS AND IGNORANT BELIEFS - BY SINGARAVELVU MADRAS.
38. LORD OF THE AIR - BY TAL BROOKE : LION PUBLISHING 121 HIGH STREET, BERKHAMSTED HERTS, U.K.
39. RECIPE FOR REVOLUTION (DSA).
40. SCS., STS AND OBCS : WHY RESERVATIONS - K. VEERAMANI, PERIYAR THIDAL, MADRAS.

41. BRAHMINS - K. VEERAMANI MADRAS.
42. BRAHMINISM (THE CURSE OF INDIA) DSA.
43. THEY BURN (160 MILLION UNTOUCHABLES OF INDIA) DALIT SAHITYA AKADEMY, BANGALOE - 3.
44. HINDUISM, FASCISM AND GANDHISM, V.T. RAJSHEKAR, DSA.
45. THE CLASS AND CASTE IN INDIA, V.T. RAJSHEKAR DSA
46. ANNIHILATION OF CASTE, DR. B.R. AMBEDKAR, DSA.
47. PERIAR PHILOSOPHY, PERIAR THIDAL, MADRAS.
48. WHO IS RULLING INDIA?, DSA BANGALORE - 3.
49. AGITATION AGAINST RESERVATION, JHAKKAR DAS PASI, 582 DLF COLONY, ROHTAK, HARYANA - 124004.
50. BACKWARD, DO YOU KNOW? MANDAL COMMISSION REPORT, GOVT OF INDIA, NEW DELHI.
51. UNTOUCHABLITY - DSA BANGALORE.
52. WOMEN IN ISLAM - MARYAM JAMEELA.
53. WHAT CONGRESS AND GANDHI HAVE DONE TO THE UNTOUCHABLES? BY B.R. AMBEDKAR, THACKER & CO. LTD. BOMBAY.
54. AFTER SECULARISM WHAT? BOOK CENTRE, 1353, CHITLI QABAR, DELHI, 110006.
55. IS NOT THE BRAHMIN A FOREIGNER? D. RAGHAVACHANDRAYYA SATH SASTRI, NEW ERA PUBLICATION, MADRA - 609 099
56. MARXISTS OR HINDU NAZIS? WHO IS MORE DANGEROUS? V.T. RAJSHEKAR DALIT VOICE EDITORIAL. DSA
57. THE UNTOUCHABLES STORY, D.P. DAS, ALLIED PUBLISHES 13/14 ASAF ALI ROAD, NEW DELHI - 110 002.
58. THE SHAHBANO CONTROVERSY, ORIENT LONGMAN LTD. CALCUTTA.
59. MAHATMA GANDHI, THE LASTE PHASE, BY PYARE LAL.
60. MILITANT HUNDUISM IN INDIAN POLITICS - BY J.A. CURRAN (THE REPORT OF THE AMERICAN CIA PRAISING RSS FOR ITS FASCIST NAZI POLICIES).
61. HOW TO EXTERMINATE MUSLIMS IN INDIA, DLIT VOICE EDITORIAL (MAY 16-31, 1985 SPECIAL ISSUE).
62. INDIAN ARCHAELOGY BY DR. R.L. SHUKLA ASI PUBLICATION 1976-77, NEW DELHI.
63. THUS SPAKE AMBEDKAR, BHAGWAN DAS, SUPREME COURT ADVOCATE, NEW DELHI.
64. ISLAM, AN INDIAN CULTURE BY B.N. PANDEY, EX GOVERNOR OF ORRISA.
65. BEGONE GODMEN (ENCOUNTER WITH SPIRTUAL FRAUDS), D.R. ABRAHAM KOVOOR, JAICO PUBLISHING HOUSE, 121, M.G. ROAD, BOMBAY - 400 023.
66. GODS, DEMONS AND SPIRITS, ABRAHAM KOVOOR, JAICO PUBLISHING G HOUSE, 121 M.G. ROAD, BOMBAY - 400 023.
67. THE DIALOGUE BETWEEN HINDUS AND MUSLIMS, CRESENT PUBLIHSING COMPANY, 2034 QUASIMJAN STREET, BALLIMARAN, DELHI - 110 006.
68. RIDDLES IN HINDUISM, B.R. AMBEDKAR, EDUCATION DEPTT. GOVT. OF MAHARASTRA PUBLICATIONS.

RECOMMENDED MAGAZINE

1. PUBLISHED IN DEFFERENT LANGUAGES.

   DALIT VOICE, 109/7TH, CROSS, PALACE LOWER ORCHARDS, BANGALORE - 560 003.

   PRESENT ANNUAL SUBSCRIPTION RS. 300/- FOREIGN AIR-MAIL U.S. 60 EUROS.

RECOMMENDED VIDEO CASSETTES

1. SHOCKING ASIA

   Atlas International Film GMBH, Munich or Replay video, London or Distribution first Film organisation, Hong Kong.
2. Shock Survey - BBC Programme, Rev. Jenkins, Bishop, Anglican Church, London.
3. World Religions.
4. History of Religions - GARY Miller (Canada)
5. Human rights - Steve Johnson (USA)

एक अनुस्मारक

यह पुस्तक आपकी पुस्तक की अलमारी की शोभा बढ़ाने के लिये नहीं है बल्कि जितना जल्दी हो सके इसे दूसरों तक पहुंचाने के लिये हैं जिससे हम अपनी मातृ भूमि की सुरक्षा कर सके। इस पुस्तक को पढ़ने के बाद कृपया स्वयं तय करें कि आपको क्या कार्यवाही करनी है।

लेखक के प्रकाशन

1. आरक्षण किसका और क्यों?
2. योग्यता मेरी जूती।
3. मनु की मानसिकता का अदालती फैसला।
4. राम रामायन और बाबर (अनूदित)।
5. कांशीराम और बहुजन समाज पार्टी : शंका और समाधान।
6. बाबा साहेब के तीन समादेश और उनका सही क्रम।
7. दलित मुस्लिम भाई चारा क्यों और कैसे? (हिन्दी, उर्दू)।
8. दलित मुस्लिम यूनिटी ह्वाई एण्ड हाउ?
9. भारत में विदेशी और गद्दार कौन?
10. मनु के कानून पर पेरियर के विचार (अनूदित)।
11. क्या डाक्टर अम्बेडकर की हत्या हुई?
12. स्वाधीनता आन्दोलन में डाक्टर अम्बेडकर की भूमिका।
13. मनुवादी मीडिया बेनकाब।
14. हिन्दू राष्ट्रवाद बेनकाब।
15. भारतीय कृषि अनुसंधान- एक विश्वासघात।
16. बिना लागत खेती।
17. नेवला और सांप (हास्य व्यंग)।
18. दलित पिछड़े न तो शूद्र है और न हिन्दू।
19. हिन्दुत्व में हिंसा।
20. हिन्दू संस्कृति भारतीय संस्कृति नहीं है।
21. राष्ट्रपिता गांधी या अम्बेडकर?
22. सामाजिक पतन के गुनहगार।
23. पाषाण महाविद्यालय कानपुर : एक गौरवशाली अतीत।
24. भारतीय संस्कृति के स्वर्णिम एवं श्याह पृष्ठ
25. आरक्षण विरोधियों की योग्यता!!!
26. अरे हिन्दू तुम जागो! (अनूदित)

टिप्पणी :

क्रम संख्या 6, 21, 22, 24, 25, 26 की पुस्तके व अन्य प्रकाशनों की फोटो
स्टेट कापी मिल सकती है।

अनुवादक का परिचय

डा0 रामनाथ का जन्म 1940 में उत्तर प्रदेश के इटावा जिले में हुआ। सन् 1962 में उन्होंने तत्कालीन राजकीय कृषि महाविद्यालय कानपुर से एम0एस0सी0 (कृषि), 1975 में सेवा के साथ भारतीय कृषि अनुसंधान संस्थान दिल्ली से नेमाटोलॉजी में पोस्ट ग्रेजुएट एवं चन्द्रशेखर आजाद कृषि एवं प्रौद्योगिकी विश्व विद्यालय कानपुर से 1982 में पी0एच0डी0 की उपाधि प्राप्त की। कृषि विभाग में वे कृषि रक्षा अधिकारी रहे। प्रोफेसर प्लान्ट पैथोलॉजी के साथ प्रशासनिक अधिकारी, पुस्तकालयाध्यक्ष केन्द्रीय पुस्तकालय एवं अधिष्ठाता छात्र कल्याण के पदों पर कार्य सम्पादित किया। चन्द्रशेखर आजाद कृषि एवं प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय शिक्षक समिति के अध्यक्ष और इसी विश्वविद्यालय के एक कार्यकाल तक कुलपति रहे। वर्तमान में वे भारतीय रिजर्व बैंक उत्तरीय क्षेत्र के बोर्ड ऑफ डायरेक्टर हैं। उन्होंने कई देशों की अध्ययन यात्रायें की। वे 1991 में कानपुर सन्सदीय सीट के बसपा के प्रत्याशी रहे। वे लम्बे समय तक माननीय काशीराम के निकट सहयोगी रहे। बहुजन मिशन व दलित मुस्लिम एकता पर उन्होंने विशेष अध्ययन किया है।